



घूँघाट की बग़ावत

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित

हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

वर्ष : 25 अंक : 15

गोरखपुर, 05 अक्टूबर 2025 रविवार

पृष्ठ : 6

मूल्य : 2

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह का दौरा आज



नई दिल्ली। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह पांच अक्टूबर को महाराष्ट्र के अहिल्यानगर जिले का दौरा कर एक चीनी मिल परियोजना का उद्घाटन और पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटिल व पद्म भूषण डॉ. बालासाहेब विखे पाटिल की प्रतिमाओं का अनावरण करेंगे। महाराष्ट्र के मंत्री राधाकृष्ण विखे पाटिल ने भाजपा के वरिष्ठ नेता के दौरे की जानकारी पत्रकारों को दी। राधाकृष्ण विखे पाटिल, बालासाहेब विखे पाटिल के पुत्र और महाराष्ट्र के सहकारिता क्षेत्र के अग्रणी व्यक्ति विठ्ठलराव विखे पाटिल के पोते हैं। राधाकृष्ण विखे पाटिल ने कहा, अमित शाह दूसरी बार सहकारिता की धरती लोनी आ रहे हैं। इससे पहले, सहकारिता मंत्रालय का कार्यभार संभालने के बाद उन्होंने यहां राज्य के पहले सहकारिता सम्मेलन में भाग लिया था। शाह सबसे पहले प्रवर नगर स्थित पद्मश्री डॉ. विठ्ठलराव विखे पाटिल सहकारी चीनी मिल के विस्तार परियोजना का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वह लोनी गांव के बाजार में दो प्रतिमाओं का अनावरण करेंगे।

मोदी की मजबूत रणनीति: ट्रंप के टैरिफ के बावजूद भारत ने बनाई मजबूत कूटनीति

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में तियानजिन में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन शिखर सम्मेलन में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आक्रामक व्यापार नीतियों और उच्च टैरिफ का सामना करते हुए अपनी रणनीति का प्रदर्शन किया। मोदी का रुख मजबूत कूटनीतिक और वैश्विक सहयोग पर आधारित रहा।

ट्रंप ने भारत की रूसी तेल आयात नीतियों को लेकर भारतीय वस्तुओं पर अचानक 50% टैरिफ की घोषणा की थी। इसके बावजूद भारत ने अपनी रणनीतिक स्वतंत्रता बनाए रखी और तेल नीति में कोई बदलाव नहीं किया। इसके साथ ही भारत ने वैकल्पिक साझेदारियों की तलाश शुरू की।

तियानजिन में मोदी ने चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात



की। इस दौरान भारत ने चीन और रूस के साथ संबंधों को और मजबूत करने का संदेश दिया। चीन ने दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के निर्यात पर लगाए गए प्रतिबंधों में छूट दी, जबकि रूस ने अमेरिकी टैरिफ से होने वाले व्यापारिक नुकसान को संतुलित करने के उपाय पेश किए।

मोदी की यह कार्रवाई भारत की स्वतंत्र विदेश नीति

को दर्शाती है और यह स्पष्ट संदेश देती है कि भारत केवल अमेरिका पर निर्भर नहीं रहेगा। रूस ने भी भारत का समर्थन करते हुए अमेरिकी दबाव को खारिज किया और मोदी की नेतृत्व क्षमता को हसंतुलित और बुद्धिमानह बताया। भारत ने घरेलू सुधारों के जरिए अमेरिकी टैरिफ के प्रभाव को कम किया और क्वाड और रडड जैसे मंचों में सक्रिय रहते हुए कई वैश्विक साझेदारियों को मजबूत किया। तियानजिन में हुई मुलाकात ने यह दिखाया कि अमेरिका के आर्थिक दबाव के बावजूद भारत अपने हितों को सुरक्षित रखते हुए बहुपक्षीय कूटनीति में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इस रणनीति ने वैश्विक स्तर पर भारत की स्थिति को मजबूत किया और दिखाया कि भारत न केवल अपने आर्थिक हितों की रक्षा कर सकता है बल्कि विश्व राजनीति में अपने प्रभाव को बढ़ा सकता है।

► नक्सलियों के लिए अमित शाह का सख्त संदेश

सरकार ने एक लाभदायक आत्मसमर्पण नीति तैयार की: अमित शाह



रायपुर (छत्तीसगढ़)। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गत शनिवार को कहा कि छत्तीसगढ़ में नक्सली आंदोलन पर लगाम लगाने के प्रयासों के तहत सरकार ने एक लाभदायक आत्मसमर्पण नीति तैयार की है। नक्सलियों से बातचीत की माँग पर शाह ने कहा कि इस बारे में बात करने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि केंद्र और छत्तीसगढ़ की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार बस्तर सहित पूरे नक्सल प्रभावित क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने बस्तर में शांति भंग करने के खिलाफ चेतावनी दी और कहा कि राज्य की मशीनरी इसका कड़ा जवाब देगी। उन्होंने कहा कि इस देश की धरती से नक्सलवाद को अलविदा कहने के लिए 31 मार्च, 2026 की तारीख तय की गई है। शाह ने यहाँ बस्तर दशहरा समारोह में एक सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कुछ लोग (नक्सलियों से)

बातचीत की बात करते हैं। मैं एक बार फिर स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि हमारी दोनों सरकारें, छत्तीसगढ़ सरकार और केंद्र सरकार, बस्तर और पूरे नक्सली क्षेत्र के विकास के लिए समर्पित हैं। इसमें बात करने की क्या बात है? हमने एक बहुत ही आकर्षक आत्मसमर्पण नीति बनाई है। आइए, हथियार डाल दीजिए।

शाह ने साफ तौर पर कहा कि अगर आप हथियार उठाएँ और बस्तर की शांति भंग करने की कोशिश करेंगे, तो हमारे सशस्त्र बल, सीआरपीएफ और छत्तीसगढ़ पुलिस जवाब देंगे। आगामी 31 मार्च, 2026 इस देश की धरती से नक्सलवाद को अलविदा कहने के लिए तय किया गया है। स्वदेशी अपनाने के आह्वान की वकालत करते हुए, शाह ने कहा, अगर 140 करोड़ की आबादी स्वदेशी के संकल्प को अपना ले, तो हमारे भारत को दुनिया की

शाह ने बस्तर के युवाओं से नक्सल आंदोलन में शामिल न होने की सलाह देते हुए हिंसा का रास्ता छोड़ने की अपील की। यह कहते हुए कि नक्सलवाद से किसी को कोई फायदा नहीं हुआ, शाह ने युवाओं से मुख्यधारा में शामिल होने का आग्रह किया और नक्सल मुक्त होने वाले गाँवों के लिए एक करोड़ रुपये के विकास कार्यों का आश्वासन दिया।

शीर्ष आर्थिक व्यवस्था बनने से कोई नहीं रोक सकता। प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में जीएसटी दरों में कमी करके एक बड़ी राहत प्रदान की है। अगर हम स्वदेशी की संस्कृति को अपनाएँ, तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था को बहुत गति मिलेगी।

शाह ने बस्तर के युवाओं से नक्सल आंदोलन में शामिल न होने की सलाह देते हुए हिंसा का रास्ता छोड़ने की अपील की। यह कहते हुए कि नक्सलवाद से किसी को कोई फायदा नहीं हुआ, शाह ने युवाओं से मुख्यधारा में शामिल होने का आग्रह किया और नक्सल मुक्त होने वाले गाँवों के लिए एक करोड़ रुपये के विकास कार्यों का आश्वासन दिया। शाह ने कहा, हमें लोगों से अपील करना चाहता हूँ कि वे गुमराह होकर नक्सलवाद में शामिल होने वाले युवाओं से हिंसा का रास्ता छोड़कर मुख्यधारा में शामिल होने का आग्रह करें। गाँव के नक्सल समस्या से मुक्त होने के बाद, उन्हें विकास कार्यों के लिए एक करोड़ रुपए आवंटित किए जाएँगे।

► प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि-सह-योजना के तहत

मत्स्य पालकों को मिलेगा जल कृषि बीमा योजना का लाभ



नई दिल्ली। केंद्र सरकार देश भर में प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि-सह- योजना के तहत एक लाख हेक्टेयर जल क्षेत्र को बीमा सुरक्षा देने जा रही है। इसी कड़ी में मीठे जल में देशी मछली पालने वाले मत्स्य पालकों के लिए एनएफडीपी पोर्टल पर जल कृषि बीमा योजना के लिए आवेदन आमंत्रित किया गया है। सरकार की इस पहल से मीठे जल में देशी मछली जैसे कतला, कॉमन कार्प, मृगल, रोहू, सिल्वर कार्प आदि पालने वालों मछली पालकों का सशक्तिकरण होगा और अंततः मछली पालकों की आय में वृद्धि होगी।

इस योजना से एक्वाकल्चर किसानों, मत्स्य पालकों, केजकल्चर संबंधित मत्स्य कृषकों, स्वयं

सहायता समूहों, सहकारी संस्थाओं सहित मछली पालन करने वाले सुक्ष्म एवं लघु उद्यमियों को प्रधानमंत्री मत्स्य किसान समृद्धि-सह- योजना के तहत बीमा योजना का लाभ मिलेगा। इसका लाभ उठाने के लिए मत्स्य कृषकों को एनएफडीपी पोर्टल पर पंजीकृत होना अनिवार्य है। योजना के बारे में विस्तृत जानकारी जिलों के जिला मत्स्य कार्यालयों से प्राप्त की जा सकती है।

इस योजना में दो प्रकार के बीमा - मूलभूत बीमा और व्यापक बीमा का विकल्प उपलब्ध है। मूलभूत बीमा बाढ़, चक्रवात, प्रदूषण, सूखा एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं के प्रति सुरक्षा प्रदान करता है। वहीं व्यापक बीमा बेसिक इश्योरेंस के अंतर्गत आने वाले जोखिमों के साथ-साथ मछलियों में रोगों आदि के कारण उत्पन्न अतिरिक्त जोखिमों को भी कवर किया जाता है।

जिन कृषकों के द्वारा बीमा प्रीमियम राशि का भुगतान कर बीमा पॉलीसी खरीदी गई हो, वैसे कृषकों को प्रीमियम राशि का 40 प्रतिशत वन टाइम इंटेसिव के रूप में प्रोत्साहन राशि भुगतान का प्रावधान है। योजना के तहत वन टाइम इंटेसिव की अधिकतम सीमा 1 लाख रुपए है, छोटे किसानों को यह लाभ प्रोत्साहन राशि के तौर पर दिया जायेगा। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं महिलाओं के लिए अतिरिक्त 10 प्रतिशत प्रोत्साहन राशि अर्थात कुल 1.10 लाख दिया जायेगा।



आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री, तेदेपा सांसदों ने दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात की नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री और तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) प्रमुख एन. चंद्रबाबू नायडू ने पार्टी सांसदों के साथ मंगलवार को यहां केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। बैठक के दौरान हुई चर्चाओं का विवरण तत्काल उपलब्ध नहीं हो सका।

यह बैठक नायडू की कई केन्द्रीय मंत्रियों के साथ जारी बैठकों के बीच हुई। नायडू की तेदेपा, केंद्र में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार की प्रमुख सहयोगी है। एक आधिकारिक बयान के अनुसार, इससे पहले दिन में नायडू ने केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात की और केंद्र की पूर्वोद्य योजना के तहत आंध्र प्रदेश के लिए वित्तीय सहायता का अनुरोध करते हुए एक विस्तृत ज्ञापन सौंपा।

बरेली जा रहे नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे की बरेली यात्रा को पुलिस ने रोक

बरेली। उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में पिछले सप्ताह शुक्रवार को 'I Love Muhammad' पोस्टर को लेकर हुए हिंसक विवाद के बाद शहर में इंटरनेट सेवा पर प्रतिबंध जारी रहा। हालांकि शुक्रवार को शहर में स्थिति शांत रही और सुरक्षा इंतजामों को बढ़ा दिया गया था। अधिकारियों और सुरक्षा बलों ने फ्लैग मार्च और पदयात्रा के माध्यम से स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखा, जबकि धर्मगुरुओं ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की।

इस बीच, समाजवादी पार्टी के नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडे की बरेली यात्रा को पुलिस ने रोक दिया। पांडे ने बताया कि उन्हें जिला मजिस्ट्रेट के माध्यम से नोटिस दिया गया कि उनका दौरा माहौल बिगाड़ सकता है। पांडे ने कहा कि सरकार अपनी असफलताओं को छिपाने के लिए उन्हें वहां जाने से रोक रही है। उनके लखनऊ स्थित आवास के बाहर भारी पुलिस तैनाती की गई थी।

पुलिस के अनुसार, शुक्रवार की नमाज सभी रिजिजों में शांति पूर्वक संपन्न हुई और नागरिकों ने प्रशासन के साथ पूरा सहयोग किया। शहर को सुपर जोन, जोन और सेक्टर में बांटकर अधिकारियों को विभिन्न स्थानों पर तैनात किया गया। झोन के माध्यम

से भी निगरानी की गई। बरेली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष मणिकंदन ने बताया कि हिंसा में शामिल दोषियों की अचल संपत्तियों की सूची तैयार की जा रही है और जल्द कार्रवाई की जाएगी।

बता दें कि इस विवाद की शुरुआत बीते माह 9 सितंबर को हुई थी, जब बरावाफत जुलूस के दौरान

फ्लैग मार्च और पदयात्रा के माध्यम से स्थिति पर नियंत्रण बनाए रखा, जबकि धर्मगुरुओं ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की।

हजारों की संख्या में लोग जमा हुए और विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पत्थर फेंके, जिसके बाद पुलिस ने लाठीचार्ज किया था। मौजूदा जानकारी के अनुसार अब तक इस मामले में 81 लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है, जिसमें मौलाना तौकीर रजा खान और उनके सहयोगी शामिल हैं। शहर में प्रशासन ने सुरक्षा कड़ी कर दी है और लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है। हिंसा के दौरान हुए नुकसान और कानून-व्यवस्था की स्थिति पर नजर रखी जा रही है।



'I Love Muhammad' पोस्टर लगाने पर 24 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी। क्षेत्र के हिंदू संगठनों ने पोस्टरों को 'जानबूझकर उकसाने वाला' बताया। फिर 26 सितंबर को कोतवाली इलाके की एक मस्जिद के बाहर लगभग

अन्तर्राष्ट्रीय सकारात्मक साहित्य मंच की मासिक काव्यगोष्ठी संपन्न

नई दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय सकारात्मक साहित्य मंच नई दिल्ली की मासिक काव्य गोष्ठी दिल्ली उद्यमिता एवं कौशल विकास विश्वविद्यालय द्वारका, नई दिल्ली में 21 सितंबर को दोपहर ढाई बजे से शुरू हुई।डीएसयूई के निदेशक पंकज श्याम लाठर की अध्यक्षता और नजफगढ़ जेन एनडीएमसी के सचिव उपायुक्त राजकिशोर प्रसाद के मुख्य आतिथ्य में यह काव्य गोष्ठी सम्पन्न हुई।

सर्वप्रथम डॉ.कीर्ति काले,प्रेम बिहारी मिश्र,श्रीकांत काले, रवीन्द्र भूषण और ओमप्रकाश कल्याणे ने माँ सरस्वती के दीप प्रज्वलन किया और कुसुमलता सिंह ने सरस्वती वंदना की।

तत्पश्चात स्वागत भाषण पढ़ते हुए अंतरराष्ट्रीय कवयित्री डॉ.कीर्ति काले ने इस मासिक काव्य गोष्ठी की विधिवत शुरूआत की। सनातनी परंपरा का निर्वाह करते हुए केक, मोमबत्ती के स्थान पर दीपक जलाए गए। और,श्रीकांत काले, ओमप्रकाश कल्याणे और जयहिंद आजाद का जन्मदिन समारोह बहुत सादगी के साथ मनाया गया। वैदिक मंत्रोंच्चार के साथ तीनों महान विभूतियों को तिलक,आरती कर अंगवस्त्र, मणिपाला और पगड़ी से अलंकृत कर एक हरा-भरा सुंदर पौधा इस कामना के साथ भेंट किया गया कि वे अपने-अपने क्षेत्र में विशाल वृक्ष का स्वरूप धारण

सोयाबीन, भट पोषण, सुरक्षा और आय सृजन की दृष्टि से महत्वपूर्ण : डॉ. लक्ष्मी

अल्मोड़ा। विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (वीपीकेएएस) की ओर से रैलाकोट में सोयाबीन और भट (काला सोयाबीन) प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। संस्थान के वैज्ञानिकों ने किसानों के खेतों में लगाए गए अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का निरीक्षण किया। इस मौके पर निदेशक डॉ. लक्ष्मी कांत ने कहा कि सोयाबीन एवं भट पोषण सुरक्षा और आय सृजन दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपूर्ण फसल है।

ये फसलें भूमि की उर्वरता बढ़ाने, कृषि विविधता को बढ़ने और जलवायु सहिष्णुता में भी योगदान देती हैं। इन फसलों की उच्च मांग है, जिसके कारण इनके उत्पादन से किसानों को बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त हो सकता है।

किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर वैज्ञानिकों से संवाद किया और व्यावहारिक सुझाव प्राप्त किए। फसल सुधार विभागाध्यक्ष डॉ. निर्मल हेड़ाऊ ने किसानों को अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन कराने के उद्देश्य को समझाया।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनुराधा भारतीय ने बताया कि केंद्र सरकार की सोयाबीन की अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना के तहत इस वर्ष सोयाबीन एवं भट की नवीन प्रजातियों वीएल सोया 89 और वीएल भट 202 की वैज्ञानिक खेती के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन जिले के रैलाकोट, दिगोटी और निरई में लगाए गए थे ताकि नवीनतम अनुसंधान

► **श्रीकांत काले, ओमप्रकाश कल्याणे और जयहिंद आजाद के जन्मदिवस को सनातनी परंपरा से मनाते हुए समाज को संस्कार संरक्षण का संदेश दिया।**
► **वंदेमातरम के उद्घोष से स्वागत और हरा-भरा पौधा भेंट कर जीवन उत्कर्ष की कामना की गई।**



करें। संस्था के परामर्श दाता राजेश चेतन के परामर्श पर केक वितरित कर समय के साथ कदमताल मिलाते हुए संस्कार और संस्कृति के संरक्षण की भूमिका मजबूती से तैयार की गई।

काव्यगोष्ठी में शामिल कवियों में जितेंद्र जीत, उदय दिवाकर पांडे, आशा,ललित कुमार शर्मा, रजनीश गोयल, कुसुमलता सिंह,पावनी कुमारी, कवयित्री सीमा रंगा इन्द्रा,नरेश बजाज,जय हिन्द आजाद,डॉक्टर वर्षा सिंह, रवीन्द्र भूषण और रवींद्र धनकड़, रंजना भूषण,मैथिली पाण्डे,प्रेम बिहारी मिश्रा,श्रीकांत काले,प्रीति शर्मा,अनिल उपाध्याय,अतुल खरे,रीतु खरे,दैवेन्द्र सिंह, दिनेश जा, शिवकुमार ,निशा, गौरव, अंजू अग्रवाल, मनीष मधुकर,असलम जावेद, सुनैना, मणि मिश्रा, शशांक शुक्ला, संदीप नजर, ओमप्रकाश कल्याणे, और डॉ.कीर्ति काले ने काव्यपाठ किया। कार्यक्रम का संचालन रमेश कुमार गंगेले अनंत ने किया।शशि जैन और श्रीमान जैन की विशेष उपस्थिति रही।

प्रस्तुति: सीमा रंगा



यातायात के नियम का पालन कर सुरक्षित चले

जानलेवा दुर्घटनाएं की खबर आए दिन समाचार के रूप में पढ़ने को मिलती रहती हैजहां गति अधिक, खराब गड्डे युक्त सड़क ,यातायात के नियमो का पालन नहीं करने से दुर्घटना घटित होती हैं बिना सावधानी के तेज गति से वाहन चलाना का नतीजा मौत को निमंत्रण देना होता है। ऐसा कोई दिन नहीं जब अखबार में वाहन दुर्घटना की खबर ना आई हो।हेलमेट सुरक्षा के अंतर्गत आता है किंतु गति तो वाहन चालक के ऊपर निर्भर करती है। वाहनो की गति सीमा जो शहरों /गावो में निर्धारित है उसकी सूचना के बोर्ड लगाये जाना चाहिएएगति सीमा का पालन नहीं होने से सड़क दुर्घटनाओ में बढ़ोतरी होती है।गति सीमा से अधिक चलते वाहनो पर अंकुश आवश्यक है साथ ही यातायात के नियमो का पालन हेतु कम से कम तहसील स्तर व्यस्तम चौराहों पर जहाँ ज्यादा वाहनों का आवागमन हो वहाँ पर सिग्नल एवं जहां गति अवरोधक न लगे हो वहां पर लगाया जाना चाहिए ताकि यातायात जाम होने की परेशानी न बने और दुर्घटनाएँ रोकी जा सके।

संजय वर्मा 'दृष्टि'
मनावर (धार)



उपलब्धियां सीधे किसानों तक पहुंच सके।

डॉ. अनुराधा ने अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का समन्वयन एवं प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम का संचालन किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. कामिनी बिष्ट, वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र मीणा, तकनीकी अधिकारी निधि सिंह ने सोयाबीन एवं भट की रोप-प्रतिरोधी उन्नत किस्मों के साथ-साथ मूल्य संवर्धन तकनीकों (जैसे टोफू, सोया दूध, दही आदि निर्माण), खरपतवार प्रबंधन, कीट प्रबंधन और संगठित होकर व्यवसायिक स्तर पर सोयाबीन और भट को लाभप्रद बनाने की जानकारी दी। वहां वरिष्ठ शोधार्थी डॉ. हेमलता जोशी, सुरेंद्र नाथ आदि मौजूद रहे।

एम्स जोधपुर में हुआ चमत्कार! हरलाल को मिला नया जीवन



जोधपुर। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) जोधपुर ने चिकित्सा जगत में एक और उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। यहां प्लास्टिक सर्जरी, ट्रॉमा सर्जरी और ऑर्थोपेडिक्स विभागों की संयुक्त टीम ने 28 वर्षीय युवक हरलाल के कटे हुए दोनों हाथों का सफल प्रत्यारोपण कर उसे नया जीवन दिया। ऑपरेशन के बाद हरलाल की स्थिति तेजी से सुधर रही है और उम्मीद जताई जा रही है कि वह जल्द ही अपने दोनों हाथों से सामान्य कार्य करने लगेगा।

बीते 18 सितंबर की सुबह हरलाल एक गंभीर सड़क दुर्घटना का शिकार हो गया था। हादसे में उसका दायां हाथ लगभग पूरी तरह से कट गया था, जबकि

बाएं हाथ में हड्डियों, नसों और धमनियों को गहरी चोट पहुंची थी। प्रारंभिक इलाज बाड़मेर जिला अस्पताल में किया गया, जिसके बाद उसे बेहतर उपचार के लिए एम्स जोधपुर रेफर किया गया। यहां ट्रॉमा सेंटर में हालत स्थिर करने के बाद तुरंत ऑपरेशन थिएटर में ले जाया गया।

डॉ. प्रकाश चंद्र काला (प्रमुख, प्लास्टिक सर्जरी विभाग) के नेतृत्व में करीब 10 से 12 घंटे तक चली जटिल शल्यक्रिया में माइक्रोस्कोप की मदद से खून की महीन नसों को जोड़ा गया, हड्डियों और टेंडन की मरम्मत की गई। इस सर्जरी में ट्रॉमा, प्लास्टिक, ऑर्थोपेडिक्स और एनेस्थीसिया विभाग के विशेषज्ञों ने बेहतरीन टीम वर्क का प्रदर्शन किया। नर्सिंग स्टाफ ने भी अहम भूमिका निभाई।

ऑपरेशन के दसवें दिन मरीज की स्थिति पूरी तरह स्थिर है। दाएं हाथ की उंगलियों में रक्त संचार सामान्य हो गया है और फिजियोथेरेपी की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। चिकित्सकों का कहना है कि हरलाल अगले 3 से 4 सप्ताह में सामान्य कार्य करने में सक्षम हो जाएगा। एम्स जोधपुर की आधुनिक माइक्रोसर्जरी तकनीक और विशेषज्ञ फैकल्टी की बदौलत यह सफलता संभव हो सकी। चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार यह उपलब्धि साबित करती है कि यदि समय पर समन्वित इलाज मिले तो गंभीर रूप से घायल मरीज न केवल जीवन पा सकता है बल्कि अपने अंग भी सुरक्षित रख सकता है।



बताया है, लेकिन खांसी की दवा से जुड़े मामलों की कड़ी में यह एक और संदिग्ध केस माना जा रहा है। स्वास्थ्य विभाग ने मामले की जांच शुरू कर दी है। प्रदेश में अब तक खांसी की दवा से मरने वाले बच्चों की संख्या 5 तक पहुंच चुकी है। इससे पहले भरतपुर और सीकर में सिरप पीने से दो बच्चों की मौत हो चुकी है। भरतपुर में बुजुर्ग महिला की तबीयत खराब हो गई। इधर चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह

ये कैसी क्लीन चिट: कप सिरप को लेकर सरकार की जांच रिपोर्ट सवालों के दायरे में

जयपुर। राजस्थान में कायसन फार्मा की कप सिरप को लेकर सरकार की जांच रिपोर्ट ही सवालों में आ गई है। शुक्रवार को सरकार ने अपनी जांच रिपोर्ट में कंपनी के झुंझुनु, भरतपुर और जयपुर से उठाए सैंपल्स को क्लीन चिट दे दी। इसके बाद देर रात कंपनी की सभी 19 दवाओं के वितरण पर रोक लगा दी और दवाओं के मानक निर्धारण की प्रक्रिया को प्रभावित करने के मामले में औषधि नियंत्रक राजाराम शर्मा को निलंबित भी कर दिया। जांच रिपोर्ट में जो सैंपल चैक किए गए उनमें दवा के साल्ट तय मानकों से या तो कम थे या ज्यादा थे।

जांच रिपोर्ट में क्या ?

जयपुर का सैंपल- बैच नंबर (KL-25/148), कंपनी कायसन फार्मा: इस सैंपल में प्रोपलीन ग्लायकॉल , एथलीन ग्लायकॉल, डायथेलीन ग्लायकॉल कंटेट नहीं था(इनके होने से दवा एलकोहाल में बदल जाती है)। डेक्ट्रोमेथारफान हाईड्रोब्रोमाइड की 13.5 एमजी मात्रा होनी चाहिए थी लेकिन जांच में यह भी 13.11 एमजी ही पाई गई।

भरतपुर का सैंपल- बैच नंबर (KL-25/147), कंपनी कायसन फार्मा: इस सैंपल में प्रोपलीन ग्लायकॉल , एथलीन ग्लायकॉल, डायथेलीन ग्लायकॉल नहीं था। डेक्ट्रोमेथारफान हाईड्रोब्रोमाइड की 13.5 एमजी मात्रा होनी चाहिए



थी लेकिन जांच में यह भी 12.98 एमजी ही पाई गई।

झुंझुनू का सैंपल- बैच नंबर (KL-25/250), कंपनी कायसन फार्मा: इस सैंपल में प्रोपलीन ग्लायकॉल , एथलीन ग्लायकॉल, डायथेलीन ग्लायकॉल नहीं था। इसके अलावा डेक्ट्रोमेथारफान हाईड्रोब्रोमाइड की 13.5 एमजी मात्रा होनी चाहिए थी लेकिन जांच में यह भी 13.22 एमजी ही पाई गई। इसी तरह कई सैंपल्स में सॉल्ट की मात्रा तय मानकों से अधिक पाई गई। हालांकि इसके लिए जांच कमटी ने स्टैंडर्ड प्रोसिजर के तहत दवा में तय मानकों से 95 से 105 प्रतिशत के सॉल्ट विरियेशन को कंज्यूमेबल माना है।

विवाद बढ़ने के बाद सरकार इस मामले में बैकफुट पर आई। शाम को मंत्री ने अपने बयान में कंपनी को क्लीन चिट दी और रात होते-होते कहा कि कंपनी के सैंपल्स की फिर से जांच करवा लेंगे। सिरप को पीने से अब तक करीब 35 बच्चे गंभीर रूप से बीमार हो चुके हैं। वहीं 4 बच्चों की मौत भी हो चुकी है।

शोभायात्रा में दिखी बुशहर की संस्कृति

ज्यूरी (रामपुर बुशहर)। सराहन में आयोजित जिला स्तरीय दशहरा मेले के तीसरे दिन महिलाओं की शोभायात्रा आकर्षण का केंद्र रही। क्षेत्र महिला मंडलों की महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में सजधज कर बुशहर की संस्कृति को पेश किया। मेले में आए देवी-देवताओं के साथ भी देवलु और ग्रामीण दिनभर थिरकते रहे। राज दरबार मैदान में दिनभर नाटियों का खूब दौर चला। जिला स्तरीय सराहन दशहरा मेले में तीसरे दिन सैकड़ों लोग पहुंचे। सभी देवी-देवता अपने-अपने स्थानों से निकलकर बाजार के बीच से नाचते गाते दरबार तक पहुंचे। जहां पहले वाद्य यंत्रों की थाप में देवी-देवता नाचे। फिर देवलुओं और मेले में पहुंचे लोगों ने पहाड़ी गीतों पर नाटी डाली। ज्यादातर देवी-देवता मंचखंडी में विराजमान रघुनाथ के सामने बैठे। कुछ देवता दरबार में मेले वाले स्थान पर बैठे रहे। शनिवार को नाटी से पहले क्षेत्र की महिला मंडलों ने अपने-अपने पारंपरिक परिधानों में सजधज कर बाजार में शोभायात्रा निकाली। बुशहर कल्चरल एंड एनवायरमेंट एसोसिएशन की पहल पर गांव-गांव से आए 27 महिला मंडलों की महिलाओं ने दोहड़, चोली, रेजटा, पेटी कोट लगे में चांदी के चंद्रहार, हाथ में तलवार लेकर बाजार में शोभायात्रा निकाली, जिसे देखकर लोगों को अपनी पुरानी संस्कृति की याद ताजा हो गई। शोभा के यात्रा के बाद महिलाओं ने दरबार में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। दशहरा मेले में रामपुर, कुल्लू और किन्नौर के करीब डेढ़ दर्जन देवी-देवता भाग ले रहे हैं। मेले में लोगों की भारी भीड़ होने से बाजार में भी काफी रौनक बनी रही।



देहरादून में कोलागढ़ रोड स्थित ओएनजीसी के डॉ. भीमराव अंबेडकर स्टेडियम में विरासत महोत्सव का आगाज। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह ने किया शुभारंभ। पहले दिन छोलिया नृत्य की प्रस्तुति से हुआ शुभारंभ। सरताज अमजद अली खान ने मंच पर दी प्रस्तुति।

विकसित भारत में महिलाओं की भूमिका पर उत्तराखंड प्रदेश ने पेश किया खाका



देहरादून। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में देश की आधी आबादी की भूमिका पर केंद्र सरकार के समक्ष उत्तराखंड का खाका प्रस्तुत किया। उन्होंने यूरोप की तर्ज पर महिला कार्यबल में हिस्सेदारी 50 प्रतिशत तक बढ़ाने व आंगनबाड़ी केंद्रों को डे बोर्डिंग स्कूल के रूप में संचालित करने का सझाव दिया। गत दिनों शुक्रवार को केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी की अध्यक्षता में हुई बैठक में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य सचिवालय के एचआरडीसी सभागार से वर्चुअल शामिल हुई। उन्होंने कहा, गर्भवती की देखभाल व छह वर्ष की आयु तक शिशुओं के पोषण और शिक्षण के कार्य को हल्के में न लेते हुए इस क्षेत्र में नियमित रूप से रिसर्च और सोशल ऑडिट करने की जरूरत है। स्थानीय निकायों को मिलने वाले बजट में से 10 फीसदी हिस्सा महिला व शिशु विकास के लिए आरक्षित किया जाए। महिला सशक्तिकरण के लिए तकनीकी कौशल युक्त वर्क फोर्स तैयार कर कर्मचारियों की अर्हता में भी तकनीकी स्किल शामिल करने की आवश्यकता है।

मंत्री रेखा आर्या ने किशोरी बालिका परियोजना का सभी जिलों में विस्तार करने व कौशल विकास पर

विशेष फोकस करने की जाए। उन्होंने आंगनबाड़ी केंद्रों की ग्रेडिंग के लिए प्रणाली विकसित करने की मांग रखी। बैठक में केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने उत्तराखंड के सुझावों को सराहा और इन्हें लागू करने का भरोसा दिलाया।

बैठक में कैबिनेट मंत्री ने शिशुओं की पोषण मानक दर को संशोधित करने, आंगनबाड़ी केंद्रों की मरम्मत के बजट को तीन हजार से बढ़ाकर 10 हजार करने, मनरेगा के तहत आंगनबाड़ी केंद्र निर्माण में बजट का 80 प्रतिशत हिस्सा सामग्री व 20 प्रतिशत हिस्सा श्रमिकों के लिए देने, टेक होम राशन योजना में फेस रीडिंग सिस्टम के साथ ओटीपी को भी शामिल करने का प्रस्ताव रखा। इसके अलावा प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना के पोर्टल को यूजर फ्रेंडली और सरल बनाने, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत बालिक-ाओं को वोकेशनल ट्रेनिंग और उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए छात्रवृत्ति देने, वन स्टॉप सेंटर के माध्यम से महिलाओं को तत्काल सहायता पहुंचाने के लिए कम से कम दो वाहनों उपलब्ध कराने, स्पर्सरशिप योजना में निर्धारित संख्या तक ही पात्र अभ्यर्थियों को लाभ देने, योजना में तैनात कर्मचारियों के मानदेय में वार्षिक बढ़ोतरी का प्रस्ताव रखा।

कफ सिरप की जांच की तैयारियां शुरू

गोरखपुर। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की सलाह को ध्यान में रखते हुए स्थानीय स्तर पर भी बच्चों के कफ सिरप की जांच की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। खाद्य एवं औषधि प्रशासन विभाग सरकारी अस्पतालों में ऐसे कफ सिरप की जांच करेगा। इसके अतिरिक्त दवा की दुकानों पर भी उसकी जांच की जाएगी। आईएमए से जुड़े बालरोग विशेषज्ञों को भी पत्र लिखकर मिश्रित केमिकल युक्त कफ सिरप को नहीं लिखने की सलाह दी जाएगी। राजस्थान में कफ सिरप के उपयोग के बाद बच्चों की मौत के मामले प्रकाश में आने के बाद केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने जहां एक तरफ खांसी सर्दी की दवाएं दो वर्ष से कम उम्र के बच्चों को नहीं दिये जाने की सलाह दिया है। वहीं दूसरी तरफ पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों को दवाएं चिकित्सक की निगरानी में दी जाती है। इसके साथ ही काफ सिरप में एक से अधिक मालीक्यूल्स के मिश्रण से बचने की सलाह दी गई है। सहायक उपायुक्त औषधि (पूरनचंद) के अनुसार, स्वास्थ्य विभाग के दिशा-निर्देशानुसार, मंडल के सभी ड्रग इंस्पेक्टर्स को निर्देशित किया गया है कि- सरकारी अस्पतालों के भंडारण में बच्चों के लिए प्रतिबंधित कफ सिरा है या नहीं इसकी जांच कर एक सप्ताह में रिपोर्ट दें। बाजार में बिकने वाले कफ सिरप के संबंध में जो गाइड लाइन आएगी उसका भी पालन कराया जाएगा।

► **सीएम बोगी आदित्यनाथ ने की नगर विकास की समीक्षा बैठक**

अनधिकृत कालोनियों और बस्तियों पर सख्ती बरतने के लिए निर्देश



प्रदेश के अवस्थापना एवं शहरी विकास कार्यों को नए स्तर पर ले जाने पर विशेष बल देते हुए सीएम योगी ने कहा- अफसर दफ्तर में बैठ कर काम करने की आदत को छोड़ें। सीएम योगी ने विकास प्राधिकरणों के उपाध्यायों को मास्टर प्लान तैयार करते समय चयन प्रक्रिया को वैज्ञानिक और पारदर्शी बनाने और अल्प मध्य और दीर्घकालिक अवधि के लिए कार्य योजनाएं बनाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि मेरठ, कानपुर एवं मथुरा-वृन्दावन के समग्र विकास हेतु 38 परियोजनाएं प्रस्तावित है।

स्वास्थ्य संबंधित प्रगति...सामाजिक प्रगति से अभिन्न रूप से जुड़ी

नई दिल्ली। हाल ही में जारी नवीनतम शिशु मृत्यु दर के आंकड़ों ने भारत के राज्यों की एक अलग ही स्थिति को प्रस्तुत किया है। केरल में शिशु मृत्यु दर (आईएमए आर) प्रति हजार जीवित जन्म-दर पर पांच है। यह राष्ट्र यह राष्ट्रीय स्तर पर पांच गुना से कम है और पिछले साल के अमेरिकी आंकड़े 5.6 से भी आगे निकल गई है। भू-राजनीतिक उथल-पुथल अमेरिकी टैरिफ, व्यापार और भारत व भारतीयों पर पड़ने वाले प्रभावों से जुड़ी खबरों के बीच देश की मृत्यु दर (आईएमए आर) यह जानकारी/नवीनतम जानकारी कोई मामूली बात नहीं है। शिशु मृत्युदर या प्रति एक हजार जीवित जन्म पर शिशु, मृत्यु की संख्या किसी भी आबादी के समग्र स्वास्थ्य व कल्याण का एक स्पष्ट संकेत है। दवाओं, कुशल स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं, स्वच्छ जल और पौष्टिक भोजन तक असमान पहुंच सभी के स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। लेकिन ये सभी मिलकर शिशु मृत्युदर को नाटकीय ढंग से प्रभावित कर सकते हैं।

केरल में शिशु मृत्युदर पांच तक पहुंच गई है वो कई राज्यों में यह दर 35 से ऊपर बनी हुई है। जो यह स्पष्ट करती है कि भारत की अभी इस दिशा में अनेक सुधारों

► एन.सी आर बी की क्राइम इन इंडिया 2023 रिपोर्ट महिलाओं के खिलाफ अपराध में उत्तर प्रदेश का बेहतरीन प्रदर्शन

लखनऊ। सूबे के मुखिया योगी आदित्यनाथ की महिलाओं के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति और मिशन शक्ति अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन में उत्तरप्रदेश की महिलाओं की सुरक्षा के दृष्टिकोण से राष्ट्रीय स्तर पर बेहतरीन स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की क्राइम ड- ेडिया - 2023 रिपोर्ट में योगी सरकार की बेहतर कानून व्यवस्था और महिलाओं सुरक्षा को लेकर सकारात्मक तस्वीर उभर कर सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में महिलाओं के खिलाफ अपराध दर औसत से कम रही है। वर्ष-2023 मे महिलाओं से जुड़े 66,381 मामले दर्ज हुए लेकिन प्रति लाख महिला आबादी पर अपराध दर केवल 586 रही जो राष्ट्रीय औसत से करीब 11 प्रतिशत कम है। इस आधार पर यूपी महिलाओं के खिलाफ अपराध दर मे देश में 17वें स्थान पर है।

उत्तर प्रदेश में विभिन्न श्रेणियों में महिलाओं के खिलाफ अपराध में भी उत्तर प्रदेश ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है। रिपोर्ट के अनुसार महिला सम्मान भंग (शौल भंग) से जुड़े मामलों में पृथ्वी राष्ट्रीय स्तर पर औसत से बेहतरीन स्थिति य रहा है। देश भर में ऐसे जुड़े

► **जीरो टॉलरेस नीति से महिला सुरक्षा मजबूत**
► **मिशन शक्ति अभियान ने जगाया महिलाओं में आत्मविश्वास**



मामलों की संख्या 83,891 रही और अपराध दर 124 रही। जब कि उत्तरप्रदेश में केवल 9,453 मामले दर्ज किए गए। और अपराध दर 83 रही। इस श्रेणी में यूपी अन्य राज्यों की तुलना में 19 स्थान पर है। दुष्कर्म के मामले में भी उत्तर प्रदेश को स्थिति संतोष जनक रही है। पूरे देश में ऐसे 29610 मामले दर्ज हुए

► **अनियोजित विकास की बजाय सुनियोजित विकास पर करें फोकस**
► **सभी विभाग मिलकर विकास साझा योजना तैयार करें।**
► **मलिन बस्तियों के विकास पर विशेष ध्यान दें अधिकारी**
► **मलिन बस्तियों के विकास की जिम्मेदारी ठेकेदारों को नहीं दी जाए**

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बिना मानक और नगर निकायों की अनुमति के बिना विक-सित होने वाली अवैध कालोनियों और बस्तियों पर सख्ती बरतने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी कालोनियों पर शुरू से ही रोक लगाया जाए। मुख्यमंत्री गत शनिवार को नगर विकास विभाग की समीक्षा करते हुए अनधिकृत कालोनियों की संख्या के बढ़ने पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए अफसरों को फटकार लगाते हुए कहा कि अनधिकृत कालोनियों को रोकने को लेकर प्रभावी कदम न उठाने वाले जिम्मेदारों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाए। साथ ही साथ उन्होंने शहरी विकास की परियोजनाओं की लेंट लतीफी पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की हिलाई बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उन्होंने अधिकारियों को चेताते हुए कहा कि-शहरों में अनियोजित विकास की बजाए सुनियोजित विकास पर बल दिया जाए। फोकस किया जाए। अन्यथा कार्यवाही होगी। उन्होंने सभी विभागों को मिलाकर विकास कार्य योजना तैयार किए जाने के निर्देश दिए। ताकि उन परियोजनाओं को समय रहते पूरा किया जा सके। मलिन बस्तियों के विकास पर विशेष जोर देते हुए कहा कि यहां साफ-सफाई, पेयजल आपूर्ति, जल निकासी, सड़क कनेक्टिविटी और स्ट्रीट लाइट जैसी

मूलभूत सुविधाओं को सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि... जल निकासी के सुधार और नई व्यवस्थाओं की नियमित मॉनीटरिंग की जाए। मलिन बस्तियों की जिम्मेदारी ठेकेदारों को न दी जाए। बल्कि नगर निकाय स्वयं इसकी जिम्मेदारी उठाएं। नगर निकायों से जुड़े नए गांवों में भी मूलभूत सुविधाएं जल्द सुनिश्चित की जाएं।

सीएम योगी ने कहा कि- स्मार्ट सिटी योजनाओं को इस तरह तैयार करें कि शहर का समग्र विकास हो। और राजस्व की वृद्धि भी सुनिश्चित हो। इसके तहत शहरों में शापिंग काम्प्लेक्स मल्टीलेवल पार्किंग, रेस्ट-रेंट और ऑडिटोरियम जैसे प्रोजेक्ट को पीपीपी मॉडल पर विकसित करें।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने दफ्तरों में बैठकर काम करने वाले अधिकारियों को फील्ड में जाकर काम करने एवं परियोजनाओं की प्रगति पर निगरानी के निर्देश दिए हैं। उन्होंने अधिकारियों को कहा कि - वे खुद को सिर्फ फाइलों तक सीमित न रखे धरातल पर उतर कर जनता की सुविधाओं की परियोजनाओं को आगे बढ़ाएं। साथ ही उन्होंने आय बढ़ाने के लिए विकास प्राधिकरणों को अपना-अपना बांड जारी करने को कहा। उन्होंने कहा कि बिना रेन वाटर हार्वेस्टिंग की व्यवस्था किए किसी भी भवन का नक्शा पास न करें।

और अपराध दर दस रही। वहीं उत्तर प्रदेश में 3516 मामले दर्ज किए गए और अपराध दर आ रही है। इस आधार पर प्रदेश 22 वें स्थान पर है। यानी राष्ट्रीय औसत से नीचे।

बाल यौन शोषण के मामले में भी यूपी की तस्वीर बेहतर कही जा सकती है। देश भर में कुल-67,694 मामले दर्ज किए गए। और अपराध दर 152 रही। वहीं उत्तर प्रदेश में 8106 मामले दर्ज किए गए। अपराध दर 102 रही। इस श्रेणी में यूपी-24वें स्थान पर है। जो राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। कुल मिल कर देखा जाए तो महिलाओं के खिलाफ अपराध दर यूपी में 586 रहा जबकि देश का औसत 662 था।

मिशन शक्ति, सख्त कानून व्यवस्था और त्वरित कारवाई का प्रभाव

महिला अपराध दर में आई कमी केवल पुलिस की सक्रियता का परिणाम नहीं बल्कि महिलाओं की शिकायत दर्ज कराने की बढ़ती प्रवृत्ति और त्वरित कानूनी कार्रवाई का भी नतीजा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में मिशन शक्ति अभियान ने महिलाओं को आत्म विश्वास दिया कि वे अपने अधिकारों के लिए खुलकर आगे आए।

एम्स में आए स्किन कैंसर के रोगी

गोरखपुर। त्वचा पर कोई भी घाव लंबे समय तक बना रहे तो इसे हल्के में न लें। यह स्किन कैंसर संकेत हो सकता है। ऐसे में स्किन कैंसर की जांच अवश्य करानी चाहिए।



एम्स के चर्म रोग विभाग में जनवरी से सितंबर के बीच 10 मरीजों में बेसल सेल कार्सिनोमा पाया गया। यह त्वचा कैंसर का सबसे सामान्य प्रकार का और विशेष तौर पर 50 से 70 वर्ष की महिलाओं में अधिकशतः पाया जा रहा है। सभी रोगियों का इलाज एम्स में किया जा रहा है। त्वचा रोग विशेषज्ञों के अनुसार- यह कैंसर शरीर के उन हिस्सों में होता जो सीधे धूप के संपर्क में रहता है। जैसे- चेहरा, कां, नाक, और गर्दन पर इसके मामले ज्यादा पाये जाते हैं। लंबे समय तक धूप में रहने वाले किसान, मजदूर ट्रैफिक पुलिस कर्मी अधिक जोखिम में होते हैं।

चर्म रोग विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील गुप्ता के अनुसार- बेसल सेल कार्सिनोमा धीरे-धीरे बढ़ने वाला लेकिन खतरनाक कैंसर है। यह त्वचा, ऊतक और हड्डी तक को नुकसान पहुंचा सकता है। इसकी शुरुआत प्रायः छोटे, चिकने या चमकदार उगार से होती है। जो समय के साथ पपड़ी या घाव का रूप ले लेता है। इन्हीं कारणों की वजह से इसे आम भाषा में रोडेंट अस्सर के नाम से पुकारा जाता है। उन्होंने बताया कि- कुछ खास बीमारियों में जैसे- गैलिंस सिंड्रोम, एंक्टिनिक केराटोसिस, जेरोडर्मा पिगमेंटोसिस या आर्सेनिक विषाक्तता वाले मरीजों में भी त्वचा कैंसर की आशंका रहती है। उन्होंने सलाह दी कि धूप से बचाव ही स्किन कैंसर को उपाय है।

महिलाओं को नौकरी करने में मात्र 76 फीसदी पतियों का सहयोग

नई दिल्ली। कामकाजी महिलाओं को उत्तर भारत के राज्यों में दक्षिणी राज्यों के मुकाबले परिवार का सहयोग अधिक मिलता है। इसका खुलासा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के एक अध्ययन में हुआ है।

बिहार और मध्य प्रदेशों कामकाजी महिलाओं को अपने पाले और परिवार से सबसे अधिक सहयोग मिलता है जबकि दक्षिणी राज्य तेलंगाना में नौकरी पेशा महिलाएं पारिवारिक असहयोग अधिक झेलती हैं। इतना ही नहीं उनकी कमाई पति और ससुराल के लोग रख लेते हैं। बिहार मध्यप्रदेश और तेलंगाना में कामकाजी महिलाओं की स्थिति का पता लगाने के लिए, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (नेशनल ह्यूमन राइस कमीशन- एनएचआरसी) और बिरला प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान यांत्रिबटस-पिलानी ने संयुक्त अध्ययन किया जिसमें यह पाया गया कि बिहार में ने करो. पेशा 91.6 फीसदी महिलाओं को पति का साथ मिलता है, जबकि - तेलंगाना में महज 52 फीसदी ही कामकाजी महिलाओं का सहयोग पति करते हैं। मध्यप्रदेश में 85 फीसदी काम काजी महिलाओं को पति का सहयोग मिलता है।

त्रिदिवसीय क्रिटिकॉन 2025 का हुआ शुभारंभ सेप्सिस की पहचान करना बहुत कठिन : डॉ. कार्लोस सांचेज

गोरखपुर। आईसीयू में भर्ती मरीजों की जान सेप्सिस के कारण खतरे में आ जाती है। कई बार यह संक्रमण आईसीयू में भर्ती होने से पहले से ही मरीज को रहता है। यह बात वेनेजुएला के क्रिटिकल केयर एक्सपर्ट डॉ. कार्लोस सांचेज ने बताया। उन्होंने कहा कि- करीब 50 प्रतिशत मरीज की जान सेप्टिस के कारण संकट में रहती है। यह इंफेक्शन आईसीयू के अंदर भी मिल सकता है। नौका विहार स्थित एक फाइव स्टार होटल में गत दिनों शुक्रवार को आयोजित त्रि-दिवसीय क्रिटिकॉन-2025 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे बतौर मुख्य वक्ता डॉ. कॉर्लोस सांचेज (जो सउदी अरब के रियाद में चिकित्सकों को आईसीयू में मरीजों की बचाव के प्रशिक्षण दे रहे हैं) ने बताया कि सेप्सिस की पहचान करना बहुत कठिन है। यह एक इमरजेंसी प्रोटोकाल है, इसके लिए अस्पताल के कर्मचारियों प्रशिक्षित करना पड़ेगा। सेप्सिस से जूझ रहे मरीजों के शरीर में संक्रमण कम करने की एंटी बायोटिक दी जाती है। दवाओं के साथ मरीजों के रेंग्पांस से सेहत पर अंतर दिखता है।

संयुक्त राष्ट्र अमीरात से आए प्रो. अशरफ ने संक्रमण उससे बचाव पर व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि- मरीजों को दो तरह से संक्रमण होता है। एक तो वह खुद लेकर वह खुद आता है। दूसरा इलाज के दौरान अस्पताल के अंदर संक्रमित हो जाता है। उन्होंने बताया कि एंटीबायोटिक रेजिस्टेंस से इलाज में दुश्वारियां बढ़ती जा रही हैं। सामान्य बीमारियों में चिकित्सक गैर जरूरी एंटीबायोटिक्स घड़ल्ले से दे रहे हैं। इसका असर मरीज को तब पता चलता है जब वह आईसीयू में पहुंचता है। उस समय रेजिस्टेंस की वजह से दवा बेअसर साबित होती है।



भावना है जो किसी अद्भुत चीज को देखकर भीतर पैदा होती है। ऑसम किसी चीज को शानदार या बहुत अच्छा बताने का तरीका है।

उदाहरण के लिए 2017 में ग्रीनलैंड के टासीलाक फ्योर्ड पर उत्तरी रोशनी (नॉर्दर्न लाइट्स) देखने वाले लोगों ने बताया कि उस दृश्य ने उनके भीतर गहरा आश्चर्य और शांति जगाई।

वैज्ञानिकों के अनुसार ऐसे अनुभव दिमाग को फाइट-ऑर-फ्लाइट मोड से बाहर निकालकर कनेक्टेड मोड में ले आते हैं, जिसमें व्यक्ति अपने परिवेश और दूसरों से गहराई से जुड़ा हुआ महसूस करता है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि आधुनिक जीवन में बढ़ते तनाव और अवसाद के दौर में ह्यआश्चर्यह्क का महत्व और भी बढ़ गया है।

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया की रिसर्च बताती है कि नियमित रूप से ऐसी गतिविधियां अपनाना, जो आश्चर्य का अनुभव कराएं जैसे प्रकृति की सैर, आकाश को निहारना, संगीत सुनना या कला से जुड़ना मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत करने का आसान और असरदार तरीका हो सकता है।

नेशनल ज्योग्राफिक की रिपोर्ट के मुताबिक यह बेपनाह खुशी का एहसास देकर मंत्रमुग्ध कर देने वाली भावना जीवन को ह्यरीसेट बटनह्क की तरह संतुलित करने की क्षमता रखती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हमारा मस्तिष्क लगातार तनाव झेलने के लिए बना ही नहीं है। जब हम किसी अद्भुत प्राकृतिक दृश्य, कला, संगीत या मानवीय करुणा, किसी अत्यंत प्रिय से बहुत लंबे अरसे बाद होने वाली मुलाकात जैसी चीजों का अनुभव करते हैं, तो आं यानी आश्चर्य की भावना सक्रिय हो जाती है। यह न सिर्फ दिल की धड़कन को पूरी तरह नियंत्रित करती है, बल्कि तनाव हार्मोन को कम करती है और मस्तिष्क को शांत, स्थिर और अधिक जुड़ा हुआ बना देती है।

कई बार लोग ऑ और ऑसम को एक जैसा समझ लेते हैं, लेकिन दोनों में फर्क है। ऑ मतलब गहरा आश्चर्य, विस्मय या सम्मान की भावना। जबकि ऑसम यानी बहुत बढ़िया, अद्भुत, शानदार। आसान शब्दों में ऑ वह गहरी

दवाओं की ईमानदारी से जांच होनी चाहिए

कफ सिरप की शिकायतों पर राजस्थान सरकार ने अधिक मुस्तैदी के साथ कदम उठाए है। अधिकारियों ने जांच के आदेश दिये हैं। संबंधित दवा के बाइस बैचों पर प्रतिबंध लगाए हैं।- ध्यातव्य है कि सिरप की सुरक्षा साबित करने की कोशिश में एक वरिष्ठ चिकित्सक ने दवा का सेवन किया और बेहोश हो गए। बेहोश होने के अन्य कारण भी हो सकते हैं, लेकिन अधिकारियों के मन में शिने अपनी जगह बना लिया। है और इस शक को अपने अंजाम तक पहुंचना चाहिए। कोई दो मत नहीं होना चाहिए कि-देश के अन्य राज्यों में भी दवा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने वाली की जिम्मेदार संस्थाएं सतर्क हो गई होंगी। अनेक स्थानों पर कफ सिरप को ही नहीं दवाओं की गुणवत्ता को परखा जा रहा होगा। अधिकतम नमूनों को भी परखा जाना चाहिए। परीक्षण किया जाना चाहिए। दवाओं के साथ खिलवाड़ से बड़ा कोई दूसरा अपराध नहीं होना चाहिए। ऐसे अपराधियों को भाया करते हुए घोड़ा नहीं जाना चाहिए। अगर इस सिरप का प्रयोग बच्चों में नहीं किया जाना था. वो फिर थे देखा जाना चाहिए कि गलती किसकी है चिकित्सक की है या दलाली के भूखे दवा विक्रेताओं की।

गौरतलब है कि सीकर जिले में पांच साल के बच्चे, भरतपुर जिले में दो साल के बच्चे की सीरप पीने से मौत हो गई। मध्य प्रदेश में ज्यादा बच्चों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि- सिरप पीने से बच्चों की किडनी खराब हो गई। ऐसे में स्पष्ट है कि दवाओं की ईमानदारी से तहकीकात होनी चाहिए।

कफ सिरप संबंधी शिकायतों का फिर उठना न केवल दुःखद, बल्कि शर्मनाक है। मध्य प्रदेश और राजस्थान में जो शिकायतें उभरी हैं वह बहुत गंभीर किस्म की हैं। अबतक करीब 11 बच्चों की मौत हो चुकी है। अगर ये मौतें नकली कफ सिरप या खराब कफ सिरप की वजह से हुई है तो फिर दोषियों को छोड़ना नहीं चाहिए। कफ सिरप की शिकायत का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि ये एक जेनेरिक श्रेणी की दवा है। और इसका विवरण सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से किया गया है। ऐसे में यह विवाद या त्रासदी बहुत संगीत हो जाती है। सवाल यह कि क्या जेनेरिक दवाओं को गुणवत्ता के साथ समझौता किया जा रहा है। क्या सरकारी स्तर पर होने वाली खरीद नकली या फर्जी दवाओं को खपाने का काम किया जा रहा है। ध्यातव्य है कि जेनेरिक दवाओं का विवरण करने वाले औषधि केंद्रों की संख्या पूरे देश में बढ़ रहा है। ऐसे केन्द्रों की संख्या लगभग 16 हजार हो गई है। सरकार उन केंद्रों को 25 हजार तक पहुंचाने की कोशिश में है। ऐसे केंद्रों की लोकप्रियता इसलिए भी बढ़ रही है कि कम कीमत पर अच्छी दवाओं का वितरण उनके जरिए हो रहा है। ऐसे में साजिश कर्ता कौन से लोग हैं इसे भी प्रकाश में लाने की निहायत जरूरत है। कफ सिरप की शिकायत का मामला तीन साल पहले भी सामने आया था। कथित रूप से अफ्रीकी देशों में भारतीय, काफ सिरप की वजह से 50 से ज्यादा बच्चों की मौत होनी बताई गई थी। तब भारत सरकार ने कड़े कदम उठाए थे। उससे भी कड़े कदमों को उठाने की जरूरत आज है।

घूँघट की बगावत

05 अक्टूबर 20२5

प्रत्येक रविवार को प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र

4

संस्कृति, शक्ति और सत्य का उत्सव है दशहरा

दो शब्दों दश तथा हरा से मिलकर बना है दशहरा। दश का अर्थ है दस तथा हरा का अर्थ है ले जाना। इस प्रकार दशहरे का मूल अर्थ है दस अवगुणों या बुराईयों को ले जाना यानी इस अवसर पर अपने भीतर के दस अवगुणों को खत्म करने का संकल्प लेना।

प्रतिवर्ष आश्विन शुक्ल दशमी को विजयादशमी पर्व के रूप में मनाया जाता है, जिसे दशहरा भी कहा जाता है। इस वर्ष उदया तिथि के अनुसार दशहरा 2 अक्तूबर को मनाया जा रहा है। समस्त भारत में दशहरा भगवान श्रीराम द्वारा लंकापति रावण के वध के रूप में अर्थात् बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में तथा आदि शक्ति दुर्गा द्वारा महाबलशाली राक्षसों महिषासुर व चण्ड-मुण्ड का वध किए जाने के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि भगवान श्रीराम ने रावण पर विजय पाने के लिए इसी दिन प्रस्थान किया था। इतिहास में कई ऐसे उदाहरण हैं, जिनसे पता चलता है कि हिन्दू राजा अक्सर इसी दिन विजय के लिए प्रस्थान किया करते थे। इसी कारण इस पर्व को विजय के लिए प्रस्थान का दिन भी कहा जाता है और इसे क्षत्रियों का ल्यौहार भी माना गया है। इस दिन अपराजिता देवी की पूजा भी होती है। मान्यता है कि सर्वप्रथम श्रीराम ने समुद्र तट पर शारदीय नवरात्रि पूजा का प्रारंभ किया था और तत्पश्चात् दसवें दिन लंका विजय के लिए प्रस्थान करते हुए विजय प्राप्त की थी। तभी से दशहरे को असत्य पर सत्य तथा अधर्म पर धर्म की जीत के पर्व के रूप में मनाया जा रहा है।

दो शब्दों दश तथा हरा से मिलकर बना है दशहरा। दश का अर्थ है दस तथा हरा का अर्थ है ले जाना। इस प्रकार दशहरे का मूल अर्थ है दस अवगुणों या बुराईयों को ले जाना यानी इस अवसर पर अपने भीतर के दस अवगुणों को खत्म करने का संकल्प लेना। दरअसल हर ईसान के भीतर रावण रूपी अनेक बुराईयां मौजूद होती हैं और सभी पर एक बार में विजय पाना संभव भी नहीं है, इसलिए दशहरे पर ऐसी ही कुछ बुराईयों का नाश करने का संकल्प लेकर इस पर्व की सार्थकता सुनिश्चित की जा सकती है। दशहरे को रावण पर राम की विजय अर्थात् आसुरी शक्तियों पर सात्विक शक्तियों की विजय तथा अन्याय पर न्याय की, बुराई पर अच्छाई की, असत्य पर सत्य की, दानवता पर मानवता की, अधर्म पर धर्म की, पाप पर पुण्य की और घृणा पर प्रेम की जीत के रूप में मनाया जाता है। दशहरे का धार्मिक के साथ सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व देश की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं राष्ट्रीय एकता का पर्व है। सही अर्थों में यह पर्व अपने भीतर छिपे दुर्गुणों रूपी रावण को मारकर तमाम अवगुणों पर विजय प्राप्त करने का शुभकाल है।

दशहरे के उत्सव का संबंध नवरात्रों से जोड़कर देखा जाता रहा है। शक्ति की उपायना का यह पर्व सनातन काल से ही शारदीय नवरात्र प्रतिपदा से शुरू होकर नवमी तक नौ तिथि, नौ नक्षत्र और नौ शक्तियों की नवधा भक्ति के साथ मनाया जाता है। माना जाता है कि नवरात्रों में देवी की शक्ति से दसों दिशाएं प्रभावित होती हैं और देवी दुर्गा की कृपा से ही दसों दिशाओं पर विजय प्राप्त होती है, इसलिए भी नवरात्रों के बाद आने वाली दशमी को ह्यविजयादशमीह्क कहा जाता है। नवरात्रों के नौ दिनों में हम देवी के नौ रूपों की पूजा करते हैं लेकिन ऐसा करते हुए हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे समाज में सभी नारियां दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती या काला का ही रूप हैं, इसलिए इन पर्वों की सार्थकता सही मायनों में तभी सिद्ध हो सकती है, जब हम अपने समाज में देवी स्वरूपा नारी को उचित मान-सम्मान दें, उसे गर्भ में ही मौत की नौद सुलाने से बचाएं, शिक्षित करके उन्हें उनका हक दिलाएं, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाएं और सम्मानित जीवन जीने का अधिकार प्रदान करें।

शारदीय नवरात्रों का अहम अंग बनकर प्रतिवर्ष दुर्गोत्सव को पूर्णता प्रदान करता बुराई पर अच्छाई तथा असत्य पर सत्य की जीत को पविभाषित करता यह पाना पर्व हमें मानवीय मूल्यों के संरक्षण में सर्वत्र विजयी होने का संदेश देता है। मान्यता है कि आदि शक्ति दुर्गा ने दशहरे के ही दिन महाबलशाली असुर सम्राट महिषासुर का वध किया था। जब महिषासुर के अत्याचारों से भूलोक और देवलोक त्राहि-त्राहि कर उठे थे, तब आदि शक्ति मां दुर्गा ने 9 दिनों तक महिषासुर के साथ बहुत भयंकर युद्ध किया था और दसवें दिन उसका वध करते हुए उस पर विजय हासिल की थी।इन्ही 9 दिनों को दुर्गा पूजा (नवरात्र) के रूप में एवं शक्ति संचय के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है और महिषासुर पर आदि शक्ति मां दुर्गा की विजय वाले दसवें दिन को विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है। श्रद्धा के समाप्ति वाले दिन मिट्टी के किसी बर्तन में मिट्टी में जौ बोए जाने की परम्रा बहुत से क्षेत्रों में देखने को मिलती है। दशहरे के दिन तक जौ उठकर काफी बड़े हो जाते हैं, जिन्हें ह्यज्वरेह्क कहा जाता है। मिट्टी के जिस बर्तन में जौ बोए जाते हैं, उसे स्त्री के गर्भ का प्रतीक माना गया है और ज्वारों को उसकी संतान। दशहरे के दिन लड़कियां अपने भाईयों की पगड़ी अथवा सिर पर ज्वारे रखती हैं और भाई उन्हें कोई उपहार देते हैं। सही मायनों में इस पर्व की सार्थकता तभी सुनिश्चित हो सकती है, जब हम इस अवसर पर आत्मचिंतन करते हुए अपने भीतर की बुराईयों रूपी रावण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए उनका विनाश करने का प्रयास करें।

भीड़ हादसों और त्रासदियों का सिलसिला कब थमेगा ?

तमिलनाडु के कर्कूर में तमिलगा वेद्री कषगम (टीवीके) प्रमुख और सुपर अभिनेता से नेता बने विजय की चुनावी रैली के दौरान मची भगदड़ दुर्भाग्यपूर्ण होने के साथ स्तब्ध करने पर भीड़ा देने वाली थी है। विजय की रैली में एक बार फिर भीड़ की बेकाबू उन्मत्तता ने 40 मासूम जिंदगियों को निगल लिया। सवाल उठता है कि आखिर कब तक ऐसी त्रा्सदियां हमारे समाज और शासन की नाकामी को उजागर करती रहेंगी ? क्यों हमारी व्यवस्थाएं भीड़ को नियंत्रित करने में बार-बार विफल होती हैं और क्यों राजनीतिक दल, धार्मिक आयोजक, सिनेमा स्टार या अन्य तथाकथित ह्रासेलिब्रिटीह्क भीड़ के जमावड़े को सफलता का पैमाना मानकर उसे उकसाते हैं ? भगदड़ में लोगों की जो दुखद मृत्यु हुई, यह राज्य एवं टीवीके प्रायोजित एवं प्रोत्साहित हत्था है। पुलिस का बर्बोसत कहां था ? चीख, पुकार और दर्द और अभिनेता से नेता बने विजय को देखने की दीवानगी एक ऐसा दर्दनाक एवं खौफनाक वाक्या है जो सुदीर्घ काल तक पीड़ित और प्रेरानन करेगा। प्रशासन की लापरवाही, अत्यधिक भीड़ और अत्यवस्थित प्रबंधन ने इस त्रा्सदी को जन्म दिया। यह घटना कोई अपवाद नहीं है, बल्कि हाल के वर्षों में दुनिया भर में सामने आई ऐसी घटनाओं की कड़ी का नया खौफनाक एवं दर्दनाक मामला है, जहाँ भीड़ नियंत्रण में चूक एवं प्रशासन, सत्ता एवं राजनीतिक दलों का एक जटिल के प्रति उदासीनता का गंभीर परिणाम एवं त्रासदी का ज्वलंत उदाहरण है। अभिनेता विजय की चमक में प्रशंसकों की चीखें एवं आहें का होना और उसे नजरअंदाज करना, अमानवीयता की चरम प्रकाश है। दुर्घटना होने एवं आम लोगों की मौतें दुखद एवं शर्मनाक है। इस राज्य में दशकों से विशाल राजनीतिक सभाओं की संस्कृति रही है, जिसे फिल्म और राजनीति के मेल ने पोषित किया है। सीएन अन्नादुराई, एमजी रामचंद्रन और जयललिता, सभी मुख्यमंत्री बनने से पहले फिल्मी सितारे थे। उनकी रैलियों में अक्सर लाखों लोग आते थे। स्टार पावर और राजनीति का मेल अधिकारियों के लिए भीड़ को नियंत्रित रखना मुश्किल काम देता है। तमिलनाडु में अभिनेता से राजनेता बने विजय की पार्टी टीवीके अभी प्रारंभिक अवस्था में है, लेकिन इसकी रैलियों में प्रशंसकों की अहमियत को कमतर आंकने के इस दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम ने न केवल राजनेताओं को बल्कि सिने स्टार को भी दामी किया है। घटना ने एक बार फिर हमारे अवैज्ञानिक व लाठी बताने वाले भीड़ प्रबंधन की ही पोल खोली है। करीब तीन महीने पहले जून में बंगलूरू में आरसीबी की आईपीएल जीत के जश्न के दौरान मची भगदड़ में भी करीब एक दर्जन लोग मारे गए थे। हालांकि, शनिवार रात कर्कूर में उपरी भीड़ किसी राजनीति जमावड़े से अधिक अमने सुपरस्टार को करीब से देखने के लिए बेताब प्रशंसकों की थी। इसी उन्माद में, जब एक पेड़ की डाली पर चढ़े कुछ समर्थक अभिनेता की प्रचार गाड़ी के पीछे खड़े लोगों पर गिर पड़े, तो दहशत फैल गई और रैली एक हादसे में बदल गई। इसी में करीब 40 लोगों के मरने और कइयों के घायल होने की खबरें हैं।

तमिलनाडु में, 20२६ में चुनाव होने हैं और टीवीके बेशक मैदान में उतरने की घोषणा कर चुकी हो, लेकिन दुर्घटना के बाद विजय जिस तरह से जल्दबाजी में चार्टर्ड फ्लाइट से चेन्नई चले गए, उससे यही साबित होता है कि अभी उन्हें राजनीति के कई सबक एवं राजनीतिक मूल्यों को सीखने हैं। क्योंकि आखिर वह अपनी जिम्मेदारी से कैसे बच सकते हैं ? टीवीके ने तीस हजार लोगों की अनुमति ली थी और इसी हिसाब से पुलिस की तैनाती भी हुई थी। लेकिन शाम होते-होते इसके दौंगुने लोग अभिनेता की एक झलक पाने को मौजूद थे।

निश्चित ही भीड़ कोई संगठित चेतन शक्ति नहीं होती, यह एक उन्मादी प्रवाह है जिसमें व्यक्ति की सोच, विवेक और संवेदना विलीन हो जाती है। भीड़ के सामने व्यक्ति का आत्मनियंत्रण टूट जाता है और वह हिंसक, अनुशासनहीन और खतरनाक रूप ले लेती है।यही कारण है कि क्रिकेट मैच से लेकर राजनीतिक रैली, धार्मिक आयोजन और फिल्मी सितारों की झलक तक, हर जगह भीड़ का जुनून कई बार मौत का तांडव बन जाता है। इतिहास गवाह है कि भीड़ की हिंसा ने न केवल जाने ली हैं, बल्कि सामाजिक ताने-बाने को भी चोट पहुंचाई है। १९८४ के सिख विरोधी दंगे, १९९२ का बाबरी मस्जिद प्रकरण, गुजरात हिंसा, धार्मिक जुलूसों में भगदड़ या तीर्थयात्राओं में दबकर मरने वाले सैकड़ों लोग-इन सबकी जड़ में ह्यभीड़ह्क है। भीड़ के भीतर छिपा हुआ सामूहिक उन्माद किसी भी क्षण हिंसा, लूट और तबाही में बदल जाता है।

भारत में भीड़ से जुड़े हादसे अनेक आम लोगों के जीवन का ग्रास बनते रहे हैं। धार्मिक आयोजनों हो या खेल प्रतियोगिता, राजनीतिक रैली हो या सांस्कृतिक उत्सव लाखों लोगों को आकर्षित करते हैं, जहाँ भीड़ प्रबंधन की मामूली चूक भयावह त्रासदी में बदलते हुए देखी जाती रही है। उदाहरण के लिये, वर्ष २०२२ में दक्षिण कोरिया के इटावन हैलोवीन समारोह में अत्यधिक भीड़ के कारण १५० से अधिक लोगों की जान चली गई थी। इसी तरह, वर्ष २०१५ में मक्का में हज के दौरान मची भगदड़ में सैकड़ों लोगों की मौत हो गई थी। वर्ष २०१३ में मध्य प्रदेश के रत्नागढ़ मंदिर में ढाँचागत कमियों से प्रेरित भगदड़ के कारण ११५ लोगों की मौत हो गई थी। हालही में महाकुंभ के दौरान नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन एवं प्रयागराज में हुए हादसे एवं हरिद्वार के प्रसिद्ध मनसा देवी मंदिर में बिजली का तार टूटने और करंट फैलने की एक अफवाह ने कई जानें ले लीं, हमारे धार्मिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन की गंभीर खामियों को उजागर कर दिया है। आग, भूकंप, या आतंकी हमलों जैसी आपातकालीन स्थितियाँ में भी भीड़ प्रबंधन की पौल खुलती रही है। आखिर दुनिया के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश में हम भीड़ प्रबंधन को लेकर इतने उदासीन क्यों हैं ? बड़े आयोजनों-भीड़ के आयोजनों में भीड़ बाधाओं को दूर करने के लिए, भीड़ प्रबंधन के लिए बुनियादी ढांचे में सुधार, सुरक्षाकर्मियों को पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करना, जन जागरूकता बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों का उपयोग करना अब नितान आवश्यक है।

गांधी और गांधी विचार को कुचलने की कुचेष्टाएं कब तक?

लंदन के प्रसिद्ध टैविस्टॉक स्क्वायर में महात्मा गांधी की ५७ साल पुरानी कांस्थ की प्रतिमा पर हुआ हमला केवल एक मूर्ति को क्षतिग्रस्त करने की घटना भर नहीं है, बल्कि यह गांधी के अस्तित्व, उनके विचार और भारत की आत्मा पर आघात है। गांधी प्रतिमा के साथ छेड़छाड़ करते हुए काले रंग से लिखा है, गांधी- मोदी, हिंदुस्तानी टेरेरिस्ट....। वहां एक तिरंगे का भी अपमान किया गया है और उसपर भी ह्यटेरेरिस्टह्क लिखा हुआ है। जिस समय यह हमला हुआ, वह भी बेहद प्रतीकात्मक है, अंतरराष्ट्रीय गांधी जयंती यानी अहिंसा दिवस से महज तीन दिन पहले। यह समय का ऐसा चयन है जो यह दर्शाता है कि अहिंसा के विचार और गांधी के व्यक्तित्व को मिटाने की एक सुनियोजित विकृत मानसिकता एवं साजिश है। गांधी की प्रतिमा महज धातु का ढांचा नहीं, बल्कि उन मूल्यों का जीवंत प्रतीक है जिन्होंने न केवल भारत बल्कि पूरी दुनिया को नई दृष्टि दी, नई दिशा दी एवं शांतिपूर्ण अहिंसक जीवनशैली दी है। इस पर आघात करना इस बात का प्रमाण है कि हिंसा की प्रवृत्तियां, आतंक की मानसिकता एवं नफरत-द्वेष की विध्वंक शक्तियां अब भी गांधी के विचारों से डरती हैं और उसे क्षत-विक्षत एवं ध्वस्त करने के षडयंत्र रचती रहती है, पर महात्मा गांधी भारत के अकेले ऐसे महापुरुष हैं जिन्हें कोई गोली या गाली नहीं मार सकती। गांधी की राजनीति व धर्म का आधार सत्ता नहीं, सेवा था, वसुधैव कुटुम्बकम् था। जनता को भयमुक्त व वास्तविक आजादी दिलाना उनका लक्ष्य था। वें सम्पूर्ण मानवता की अमर धरोहर हैं। उन्होंने दुनिया को अहिंसा का सूत्र देकर शांतिपूर्ण विश्व-संरचना की। दलितों के उद्धार और उनकी प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन लगा दिया था। उनके जीवन

कफ सिरप से बच्चों की मौत की खबरें चिंताजनक, दवाओं की गुणवत्ता पर निगरानी अनिवार्य

मध्य प्रदेश और राजस्थान से बच्चों की मौतों की जो खबरें आईं, उन्होंने पूरे देश की नींद उड़ा दी है। महज खांसी-जुकाम जैसी सामान्य बीमारी के लिए दी जाने वाली खांसी की दवा, बच्चों के जीवन पर इतनी घातक साबित होगी, इसकी कल्पना भी नहीं की गई थी। पिछले एक महीने में मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में ९ बच्चों की मौत और राजस्थान के विभिन्न जिलों में ३ बच्चों की मौत ने चिकित्सा व्यवस्था, दवा नियमन और प्रशासनिक सतर्कता, तीनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

हालांकि केन्द्र सरकार ने साफ किया है कि मध्य प्रदेश से लिए गए १९ सैंपल्स में से ९ की जांच रिपोर्ट में डायथिलीन ग्लाइकोल या एथिलीन ग्लाइकोल जैसी जानलेवा रसायनों की मौजूदगी नहीं पाई गई है।

आपको बता दें कि छिंदवाड़ा के पारासिया और आसपास के गांवों में अगस्त के अंत से बच्चों में सर्दी-खांसी और हल्का बुखार देखा गया। डॉक्टरों ने उन्हें साधारण खांसी की सिरप और दवाएं दीं। लेकिन कुछ ही दिनों में बच्चों की तबीयत बिगड़ने लगी, पेशाब कम होना, शरीर में सूजन और किडनी से जुड़ी जटिलताएं बढ़ने लगीं। नतीजतन, नौ मासूमों की जान चली गई और पांच बच्चे नागपुर में विशेष इलाज के लिए भर्ती हैं।

राजस्थान में हालात और भी उलझे हुए हैं। सरकार द्वारा मुफ्त दवा योजना में बांटी जा रही डेक्स्ट्रोमेथॉर्फन-आधारित सिरप लेने के बाद सीकर, भरतपुर और बांसवाड़ा के कई बच्चों में गंभीर लक्षण दिखे, जैसे- उल्टी, चक्कर, बेहोशी और घबराहट। इनमें तीन बच्चों की मौत भी हो चुकी है। राज्य स्वास्थ्य विभाग ने भले ही इन मौतों को सीधे दवा से जोड़ने से

आधारभूत सुविधाओं की कमी से फल-फूल रहे पाखंडी धर्म गुरु

भारत में आधारभूत सुविधाओं की कमी एक जटिल मुद्दा है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव है, और शहरी क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे (जैसे सड़कें, पुल, आदि) में खामियां पाई जाती हैं। इसके मुख्य कारण भूमि अधिग्रहण में बाधाएँ, भ्रष्टाचार, कुशल प्रबंधन की कमी और मांग में वृद्धि हैं। ऐसे हालात देश में दोंगी बाबाओं को पनपने का मौका देते हैं। ऐसे फर्जी बाबाओं, मौलवियों और पादरियों की सूची में एक नाम और जुड़ गया है। दिल्ली के इंस्टीट्यूट में यौन शोषण के मामला मामला सामने आया है। पुलिस ने मामले में बड़ा खुलासा करते हुए बताया कि १७ छात्राओं ने श्री शारदा इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंडियन मैनेजमेंट के प्रबंधक स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। पुलिस में दर्ज एफआईआर के मुताबिक, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की छात्राओं को दर रात कथित स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती के क्वार्टर में बुलाया जाता था। स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती मूल रूप से ओडिशा का रहने वाला है और उस पर पहले भी २००९ और २०१६ में छेड़छाड़ के केस दर्ज हो चुके हैं।

धर्म की आड़ लेकर ऐसे फर्जी बाबा, मौलवी और पादरियों की फेहरिस्त काफी लंबी है, जिन्होंने न सिर्फ लोगों को शोषण किया बल्कि धार्मिक आस्थाओं को चोट पहुंचाने का काम किया है। देश में कई ऐसे बाबा हैं जिन्होंने धर्म की आड़ में लोगों का शोषण किया। बाद में पकड़े गए और अब जेल की सलाखों के पीछे हैं या फरार हैं। हरियाणा के रोहतक की सुनारिया जेल में सजा काट रहे गुरमीत राम रहीम को २०१७ में दो साक्षियों से दुष्कर्म के मामले में २० साल की सजा सुनाई गई थी। इसके अलावा पत्रकार रामचंद्र छत्रपति और डेरा के पूर्व प्रबंधक रंजीत सिंह की हत्या के मामले में भी उन्हें उम्रकैद की सजा मिली। गुरमीत को बार-बार पैरोल और फरलो मिलने की वजह से विवाद भी रहा है। हाल ही में, अगस्त २०२५ में उन्हें ४० दिन की पैरोल दी गई, जो उनकी १४वीं रिहाई थी।

राजस्थान की जोधपुर जेल में बंद आसाराम को २०१८ में नाबालिग से दुष्कर्म के मामले में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। उन पर सूरत की दो सगी बहनों से दुराचार, गवाहों पर हमला और हत्या जैसे गंभीर आरोप हैं।

आसाराम का बेटा नारायण साई भी सूरत की जेल में दुष्कर्म के मामले में उम्रकैद की सजा काट रहा है। हरियाणा के ही एक और बाबा संत रामपाल हिसार जेल में बंद हैं। सतलोक आश्रम चलाने वाले रामपाल पर देशद्रोह, शारीरिक शोषण, अवैध हथियार रखने और सरकारी काम में बाधा डालने जैसे आरोप हैं। जिसके बाद उन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई गई। स्वामी भीमानंद, जिन्हें इच्छाधारी बाबा के नाम से जाना जाता है। दिल्ली में देह व्यापार का रैकेट चलाने के आरोप

की विशेषता कथनी और करनी में अंतर नहीं होना था। महात्मा गांधी की प्रतिमा पर अज्ञात लोगों ने जो हमला किया और आपत्तिजनक नारे लिखे। भारतीय उच्चायोग ने इसे अहिंसा की विरासत पर हमला बताया। मेट्रोपॉलिटन पुलिस जांच में जुटी है। ब्रिटेन की उच्चायुक्त लंडी कैमरन ने घटना को दुखद बताते हुए कहा कि गांधी की शिक्षाएं हमें सदा एकजुट करती रहेंगी। गांधी के व्यक्तित्व एवं विचारों को आहत करने की यह घटना केवल ब्रिटेन के अस्तित्व एवं अस्मिता तक सीमित नहीं रहती, बल्कि भारत की गरिमा और उसकी स-ंस्कृतिक उपस्थिति को भी चुनौती देती है। जब किसी राष्ट्र के सार्वभौमिक प्रतीक पर हमला होता है, तो वह उस राष्ट्र के स्वाभिमान और उसके विचारों पर हमला माना जाता है। गांधी केवल भारत के नायक नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के नैतिक मार्गदर्शक हैं। उनका स्मारक क्षतिग्रस्त करना मानवता की उस चेतना को धूमिल करने का प्रयास है जो संवाद, सहिष्णुता, अहिंसा और शांति पर आधारित है। ऐसे समय में जब दुनिया युद्ध, आतंक और कट्टरता से त्रस्त है, गांधी का विचार और भी प्रासंगिक हो जाता है।

ऐसे विचार को कुचलने की चेष्टा न केवल भारत के लिए बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती है। समीक्षात्मक दृष्टि से देखा जाए तो यह घटना हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर क्यों अहिंसा जैसे सार्वभौमिक मूल्य आज के दौर में असहनीय प्रतीत होते हैं ? क्यों कुछ समूह इतिहास को मिटाने और संवाद की जगह हिंसा को स्थापित करने पर अमादा हैं ? यह केवल अतीत की स्मृति पर हमला नहीं है, बल्कि भविष्य की दिशा पर भी सवाल खड़ा करता है।

डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ को इसके लिए विशेष

प्रशिक्षण और दिशा-निर्देश जारी करने होंगे। आगे की राह क्या हो यदि इस पर गौर करें तो सबसे पहला काम यह होना चाहिए कि जिन कंपनियों का रिकॉर्ड खराब है, उनकी दवाओं को सरकारी आपूर्ति श्रृंखला से तत्काल हटाया जाना चाहिए। साथ ही, फार्मा कंपनियों के लिए कठोर ऑडिट और बार-बार टेस्टिंग अनिवार्य की जानी चाहिए। इसके अलावा, जहां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की भूमिका अहम है, वहां दवाओं के सही उपयोग और खुराक के बारे में स्पष्ट गाइडलाइन दी जानी चाहिए। साथ ही परिवारों को बताना चाहिए कि बच्चों को बिना डॉक्टर की सलाह के खांसी-जुकाम की सिरप न दें। साधारण घरेलू देखभाल जैसे भाप, गर्म पानी और साफ-सफाई कई बार ज्यादा प्रभावी होती है। इसके अलावा, मौत के मामलों पर स्पष्ट रिपोर्ट जनता के सामने समय पर लाना सरकार की जिम्मेदारी है, ताकि अफवाहें और डर न फैलें।

देखा जाये तो यह केवल छिंदवाड़ा या राजस्थान का मामला नहीं है, बल्कि पूरे देश के लिए चेतावनी है। बच्चों की जिंदगी से जुड़ा यह संकेत हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारी दवा निगरानी प्रणाली उतनी सख्त है, जितनी होनी चाहिए ? क्या हमने स्वास्थ्य सेवाओं में सतर्कता और जिम्मेदारी को पर्याप्त महत्व दिया है ?बहरहाल, इन सवालों के जवाब केवल जांच रिपोर्ट से नहीं, बल्कि प्रणालीगत त्रुटियों से आगे। आज जरूरी है कि हर मौत को गम्भीरता से लिया जाए, ताकि भविष्य में कोई मासूम अपनी जान न गंवाए। यह हादसा केवल एक त्रासदी नहीं, बल्कि स्वास्थ्य सुरक्षा तंत्र को मजबूत करने की अनिवार्य पुकार है।

अक्सर देखने में आता है कि ग्रामीण परिवार खांसी-जुकाम की हल्का समझकर बच्चों को अपने आप ही दवाएं दे देते हैं। यहां यह समझना जरूरी है कि बच्चों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता अलग होती है और कई दवाओं के दुष्प्रभाव घातक हो सकते हैं।

इस बीच, स्वास्थ्य मंत्रालय ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को साफ हिदायत दी है कि दो साल से छोटे बच्चों को खांसी-जुकाम की दवाएं न दी जाएं।

आधारभूत सुविधाओं की कमी से फल-फूल रहे पाखंडी धर्म गुरु

को लंदन जाते समय दिल्ली एयरपोर्ट से पकड़ लिया गया था। साल २०२३ में बर्जिंदर सिंह के ठिकानों पर आयकर विभाग ने छापेमारी की थी। तमिलनाडु के कोयंबटूर में ईसाई पादरी को दो नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान ३२ वर्षीय जॉन जेबराज के रूप में हुई जो कोयंबटूर के किंग जेनरेशन चर्च में पादरी था और केरल के इलाकों में भी धर्मोपदेश देता था। पुलिस ने उसे पॉक्सो एक्ट के तहत गिरफ्तार किया।

हमारे देश में धर्मभीरु जनता के अंधविश्वासों का फायदा उठाकर बाबागिरी का कारोबार किस तरीके से फूल-फल रहा है, इसका उदाहरण डेरा सच्चा सौदा प्रमुख बाबा राम रहीम प्रकरण में सामने आया। यौन शोषण मामले में सीबीआई अदालत ने जब उन्हें दोषी ठहराया तो पंजाब-हरियाणा के कई हिस्सों में आगजनी-हिंसा हुई। बाबा समर्थकों ने दो रेलवे स्टेशनों में आग लगा दी और कुछ स्थानों पर हालात नियंत्रित करने के लिए कर्फ्यू लगाया पड़ा। अतीत में देश में ऐसी स्थितियां कई बार बन चुकी हैं। हरियाणा में ही २०१४ में संत रामपाल के समर्थक ऐसा कर चुके हैं। पुलिस से संत रामपाल के समर्थक सीधे टकराए थे और हालात काबू पाना मुश्किल हो गया था। यही नहीं, मथुरा में बाबा रामवृक्ष के बेकाबू समर्थकों को नियंत्रित करने में पुलिसकर्मियों को भी जान गंवानी पड़ी थी। रामवृक्ष यादव बाबा जय गुरुदेव के अनुयायी थे, जिन्होंने एक निजी सेना बना ली थी और उनकी समानांतर सरकार चलाने का प्रयास किया था। अंततः रामवृक्ष पुलिस के साथ मुठभेड़ में मारा गया।

इससे पहले कथित संत आसाराम बापू के समर्थक ऐसी ही हिमाकत कर चुके हैं। जयपुर में वर्ष २००१ में बाबा जय राम दास के मामले में भी ऐसा ही हुआ। पुलिस ने इस बाबा को अपनी एक महिला भक्त की हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया। इस बाबा पर दर्जनों महिलाओं के यौन शोषण का आरोप लगा। बाबा बीमारी जब के कारण अस्पताल में भर्ती हो गया तब सैकड़ों की संख्या में महिलाएं उसके दर्शन करने पहुंच गई, यह जानते हुए भी इस बाबा पर दर्जनों महिलाओं ने यौन शोषण के आरोप लगाए हैं। दरअसल देश में धर्म की आड़ लेकर लोगों के दुख–दर्द दूर करने का झांसा देने वाला बाबा अपना उल्लू सीधा करते रहे हैं। ज्यादातर लोग गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, सम्पत्ति और घरेलू विवाद के कारण बाबाओं की शरण में जाते हैं।

इन समस्याओं के समाधान की जिम्मेदारी चुनी हुई सरकारों की है। सरकारों इनका निदान करने में नाकाम रही हैं। ऐसी समस्याओं से पीड़ित लोग दोंगी बाबाओं के झांसे में आ जाते हैं। बाबाओं का यह जाल तब तक कायम रहेगा, जब तक सरकारें अपनी जिम्मेदारी ईमानदारी से पूरी नहीं कर पाती।

युद्ध अंतिम विकल्प



आज के सामाजिक-राजनीतिक नेताओं के लिए यह एक सबक है कि यों ही नहीं राम के पीछे पूरा समाज - चल पड़ा था। राम जहां रहते थे वहां सबका मन लगता- था। वह जहां भी जाते थे. लोग कहने लगते थे आप हमें भी साथ ले चलिए। संसार में राजपाट तो बहुत आए-गए पर हमारी स्मृति में राम राज्य एक स्वप्न की तरह बस गया। इंडोनेशिया, कंबोडिया थाईलैंड जैसे देशों ने लोगों ने धर्म बदल लिए, पर राम को नहीं भूल पाए। राम को भूलना क्यों असंभव है? यह एक विचारणीय प्रश्न है। विजयादशमी सबक लेने का अनुपम अवसर है। संसार में बुराई और अच्छाई के बीच संघर्ष की गाथाओं-महागाथाओं में रामायण का जो स्थान है, वह किसी अन्य ग्रंथ का नहीं। रामायण में वर्णित राम-रावण का युद्ध-संघर्ष एक आदर्श है, उज्ज्वल प्रतीक है। एक महाथी रावण के विरुद्ध पैदल तपस्वी राम का जयघोष सदा से प्रेरणा स्रोत रहा है। यह हमारे आधुनिक समाज का एक स्वाभाविक किन्तु ग्रासद पक्ष है कि भौतिक संपन्नता के चलते रावण की चर्चा आवश्यकता से अधिक होने लगी है। तपस्वी राम की तुलना में वैभव पति रावण का आकर्षण ज्यादा दिखता है किंतु रावण के आकर्षण का खोखलापन कदम-कदम पर स्पष्ट है। रावण को ज्ञान है, किन्तु, ज्ञान का सदुपयोग सदुपयोग नहीं करता है। तो उसकी दुर्गति हो जाती है। रावण को प्रेम करना नहीं आता है, हरण-अपरण आता है। उसे भक्ति और आध्यात्म नहीं, झूठ और फरेब आता है। स्मरणीय है कि - वह स्वर्ण लंका का रचनाकार नहीं है, वह तो उसका लुटेरा है। रावण जैसे-चोर लुटेरों का एक दिन सब कुछ छिन जाता है। रावण के लिए स्त्रियां भोग की वस्तु हैं जबकि राम अपनी एक अकेली सीता के लिए सागर पर सेतु, बांध देते हैं। प्रेमी हो तो राम जैसा निष्ठावान जो अपनी प्रिया के लिए पाताल आकाश एक कर दे। सखा हो तो वा राम जैसा-जो वानरों, भालुओं, असुरों को भी गले लगा ले स्नेह की शक्ति के कारण ही राम की सेना में सेवक शिरोमणि-महावीर हनुमान से भी है और एक नहीं गिलहरी भी। राम का संघर्ष बहुत विस्तृत है। आनी इस यात्रा में वह कभी लक्ष्य तक पहुंचते हैं। जब वह केवट का हृदय जीत लेते हैं और शबरी के जूठे बेर खाते हैं। ऐसा नहीं है कि रावण पर राम ने अचानक हमला बोल दिया। दुनिया में ऐसे अनेक देश है जो दिन या रात किसी भी समय अपने शत्रुओं पर हमला बोल देते हैं और किसी की एक नहीं सुनते। राम ने हनुमान, अंगद, विभीषण, मंदोदरी कुंभकर्ण और न जाने कितने लोगों के माध्यम से रावण को समझाते के लिए समझाने के प्रयास किए। अनेकों प्रयासों के बावजूद जब रावण नहीं माना, तब राम ने आक्रमण किया। राम को अच्छे से पता था कि युद्ध संसार के लिए उचित नहीं है और युद्ध अंतिम विकल्प है।



विजय गर्ग

आधुनिक जीवनशैली की भाग-दौड़ में महिलाएं अपनी जरूरत या सुविधा के लिए कई बार ऐसे निर्णय लेती हैं, जो उनके स्वास्थ्य के लिए घातक साबित हो सकते हैं। महिलाओं के स्वास्थ्य का मतलब उनका संपूर्ण हित है। यह हमारे समाज की भी नैतिक जिम्मेदारी है कि महिलाओं को सुरक्षित और स्वस्थ जीवन जीने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान की जाए। कुछ समय पहले दिल्ली में एक युवती की असामयिक मृत्यु ने एक बार फिर हमारे सामने महिलाओं के स्वास्थ्य और दवाओं के अनियंत्रित उपयोग की गंभीर समस्या को उजागर किया है। इस युवती की मृत्यु इसलिए हो गई, क्योंकि उसने बिना चिकित्सीय सलाह के हार्मोन दवाओं का सेवन किया था, जिससे उसे 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' (डीवीटी) की समस्या हो गई थी। यह घटना न केवल दवाओं के दुरुपयोग की समस्या को दर्शाती है, बल्कि महिला स्वास्थ्य के प्रति हमारे माज की उदासीनता को भी उजागर करती है।

यह कोई छिपा तथ्य नहीं है कि जागरूकता के अभाव में कई महिलाएं अपनी किसी बीमारी का इलाज समय पर नहीं करा पातीं और उसका खमियाजा या तो वे लंबे समय तक उठाती या फिर शरीर में कोई जटिल रोग बैठ जाता है, जो उनके सहज जीवन को बाधित कर देता है। दिल्ली में जिस। युवती की 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' से मौत हुई, उसके मामले में भी कुछ इसी तरह की जटिलता कारण बनी यह ऐसी गंभीर बीमारी है, जिसमें शरीर की गहरी नसों में रक्त के थक्के बन जाते हैं। चिकित्सकों ने जब इस मामले में गहन जांच की तो पता चला कि रक्त का थक्का नाभि तक फैल गया था। यह घटना हमारे समाज की उस मानसिकता को दर्शाती है, जहां महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया जाता। 'डीप वेन थ्रोम्बोसिस' की पहचान करना अत्यंत

भारतीय विज्ञान में महिलाओं की अधूरी यात्रा



बल्कि राष्ट्रीय नवाचार और उत्कृष्टता की है। सवाल यही है कि भारत कब इस रिसाव को रोकेगा और कब महिलाएं बराबरी से विज्ञान की बागडोर थामेंगी।

भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में बीते कुछ दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है। अंतरिक्ष कार्यक्रम, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल अर्थव्यवस्था और नैनो प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिकों की पहचान आज विश्व स्तर पर बनी है। इस यात्रा में महिलाओं की भागीदारी केवल औपचारिकता भर नहीं रही बल्कि ठोस और प्रभावी साबित हुई है। डॉ. टेसी थॉमस, जिन्हें मिसाइल महिला कहा जाता है, या चंद्रयान-3 मिशन की महिला वैज्ञानिकों कल्पना कलहस्ती और ऋतु करिधल का योगदान इसका जीवंत उदाहरण है। यह स्पष्ट करता है कि भारतीय महिला वैज्ञानिकों की भूमिका अब केवल प्रतीकात्मक नहीं रही, वे वास्तविक परिवर्तन की धुरी बन चुकी हैं। फिर भी तस्वीर का दूसरा पहलू चिंता पैदा करता है। भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पढ़ाई करने वाली लड़कियों की संख्या बड़ी है, परंतु शोध और नेतृत्व के पदों तक पहुंचते पहुंचते यह संख्या लगातार घटती जाती है। इस प्रवृत्ति को ही ह्यलीकी पाइपलाइन कहा जाता है। ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन की 2022 की रिपोर्ट बताती है कि स्नातक स्तर पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भागीदारी लगभग तैतालीस प्रतिशत है। यह आंकड़ा किसी भी देश के लिए गौरवपूर्ण हो सकता है। लेकिन जब यही लड़कियाँ आगे शोध और अनुसंधान के मार्ग पर बढ़ती हैं तो मात्र चौदह प्रतिशत ही इस क्षेत्र में टिक पाती हैं। यही नहीं, उच्च शिक्षा संस्थानों में महिला संकाय की संख्या लगभग पंद्रह प्रतिशत तक सीमित है। देश के सबसे प्रतिष्ठित संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएससी या सीएसआईआर अब तक किसी महिला के नेतृत्व में नहीं रहे।

वैज्ञानिक पुरस्कारों और मान्यताओं की दुनिया में भी असमानता साफ दिखती है। वर्ष 2023 तक दिए गए छह सौ से अधिक शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कारों में केवल सोलह ही महिला वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया। यह आँकड़े बताते हैं कि प्रारंभिक स्तर पर भले ही महिलाएँ विज्ञान और प्रौद्योगिकी में समान उत्साह के साथ प्रवेश करती हैं, लेकिन जैसे-जैसे जिम्मेदारियाँ और दबाव बढ़ते हैं, वैसे-वैसे उनकी संख्या कम होती जाती है। यही वह रिसाव है जो राष्ट्रीय उत्कृष्टता को कमजोर करता है। इस रिसाव की कई परतें हैं। मातृत्व और परिवार की जिम्मेदारियाँ महिलाओं के करियर को सबसे अधिक प्रभावित

करती हैं। लंबे कार्य घंटे, उच्च दबाव वाले प्रोजेक्ट और लचीले विकल्पों की कमी के कारण बहुत सी प्रतिभाशाली महिलाएँ बीच रास्ते से बाहर हो जाती हैं। संस्थागत ढाँचे में भी पुरुष वर्चस्व कायम है। विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में पदोन्नति और नेतृत्व पदों पर जाने का मार्ग महिलाओं के लिए कठिन है। अनौपचारिक नेटवर्क, सामाजिक पूर्वाग्रह और लैंगिक धारणाएँ इस कठिनाई को और गहरा करती हैं।

वित्तपोषण और मान्यता का संकट भी कम नहीं है। शोध अनुदान में महिलाओं को कम प्राथमिकता दी जाती है। यह उनकी परियोजनाओं की दिशा और नवाचार की संभावनाओं को सीमित करता है। सामाजिक दृष्टिकोण भी विज्ञान को पुरुष प्रधान क्षेत्र मानता है, जिससे परिवार और समाज अक्सर लड़कियों को इस ओर बढ़ने से हतोत्साहित करते हैं। यदि कोई महिला करियर ब्रेक लेे भी ले तो पुनः-प्रवेश बेहद कठिन हो जाता है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की महिला वैज्ञानिक योजना अवश्य मौजूद है, परंतु उसकी पहुँच अभी बहुत सीमित है।

यह समस्या केवल महिलाओं की व्यक्तिगत उपलब्धियों की बाधा नहीं है, बल्कि भारत के भविष्य से भी गहराई से जुड़ी है। जब भारत विकसित भारत के सपने को पूरा करने का संकल्प ले रहा है, तब वैज्ञानिक नवाचार और शोध में आधी आबादी की भागीदारी को नजरअंदाज करना आत्मघाती साबित हो सकता है। विश्व बैंक का अनुमान है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में महिलाओं की भागीदारी बढ़ने से 2025 तक भारतीय अर्थव्यवस्था को सात सौ अरब डॉलर की अतिरिक्त वृद्धि मिल सकती है। यदि महिलाएँ बराबरी से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वच्छ ऊर्जा, जैव प्रौद्योगिकी और डिजिटल प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में योगदान करेंगी तो भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धा स्वतः बढ़ेगी। इसके साथ ही यह भारत की वैश्विक छवि का भी सवाल है। लैंगिक समानता की दिशा में ठोस कदम भारत की अंतरराष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं और नेतृत्व की आकांक्षाओं के अनुरूप हैं। जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर जब भारतीय महिला वैज्ञानिक अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बोलती हैं तो वह भारत की विश्वसनियता का प्रतीक बन जाता है। इससे भी आगे, यह आने वाली पीढ़ियों की आकांक्षा का प्रश्न है। अगर आज हम विज्ञान में महिलाओं के लिए समान अवसर

सुनिश्चित करते हैं, तो कल हमारी बेटियाँ आत्मविश्वास से भरी होंगी और विज्ञान को अपनी पसंद का क्षेत्र मानेंगी। सरकार ने कुछ सकारात्मक कदम उठाए हैं। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग की किरण योजना, महिला वैज्ञानिक योजना, एसईआरबी पॉवर फेलोशिप जैसी पहलें युवा महिला शोधार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए बनाई गई हैं। इसरो और डीआरडीओ ने लचीले कार्य समय, विस्तारित मातृत्व अवकाश और घर से काम करने जैसे विकल्प लागू किए हैं। कई संस्थानों में लैंगिक संवेदनशीलता समितियाँ भी गठित की गई हैं। लेकिन यह सब अभी भी अपर्याप्त है। आवश्यकता है कि इन योजनाओं की पहुँच को बढ़ाया जाए और उन्हें प्रभावी रूप से लागू किया जाए।

आगे की राह यह है कि अनुसंधान संस्थानों और विश्वविद्यालयों में महिलाओं के लिए न्यूनतम प्रतिनिधित्व की सीमा तय की जाए। महिला नेतृत्व वाली परियोजनाओं के लिए विशेष वित्तपोषण सुनिश्चित हो। करियर ब्रेक के बाद पुनः-प्रवेश को आसान बनाया जाए और अधिक संख्या में पुनः-प्रवेश फेलोशिप दी जाए। वरिष्ठ महिला वैज्ञानिकों और नई शोधार्थिनियों के बीच मार्गदर्शन का सेतु तैयार किया जाए। सबसे बढ़कर, समाज की मानसिकता बदली जाए। परिवार और समाज को यह स्वीकार करना होगा कि विज्ञान पुरुषों का नहीं, बल्कि सभी का क्षेत्र है। भारतीय विज्ञान में महिलाओं की यात्रा प्रतीकात्मक उपस्थिति से आगे बढ़ चुकी है, लेकिन नेतृत्व तक पहुँचने में अब भी कई बाधाएँ मौजूद हैं। यह बाधाएँ केवल व्यक्तिगत हानि नहीं बल्कि राष्ट्रीय हानि भी हैं। अगर भारत को ज्ञान शक्ति बनना है, तो इस रिसाव को रोकना ही होगा। वास्तविक नवाचार और उत्कृष्टता तभी संभव है जब प्रयोगशालाओं, विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में पुरुष और महिलाएँ बराबरी से कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों। यह केवल समान अवसर का सवाल नहीं है, बल्कि भारत के वैज्ञानिक भविष्य और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का भी प्रश्न है



-प्रियंका सौरभ

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुसार, एस्ट्रोजन युक्त गर्भनिरोधक दवाओं का उपयोग करने वाली महिलाओं को नियमित चिकित्सीय जांच कराते रहना चाहिए। विशेष रूप से पैंतीस वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं, धूम्रपान करने वाली महिलाओं, उच्च रक्तचाप की समस्या एवं मोटापे से ग्रस्त महिलाओं और जिनके पारिवारिक इतिहास में रक्त का थक्का बनने की समस्या है, उनके लिए यह जोखिम और भी अधिक बढ़ जाता है।

महिलाओं की सेहत के समांतर जोखिम

संबंधित दवाओं का गलत उपयोग गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। सामाजिक दबाव, शर्म और अज्ञानता के कारण महिलाएं अक्सर अपनी समस्याओं को छिपाती हैं और बिना चिकित्सक की सलाह के दवाओं का सेवन करती हैं। विशेष अवसरों, यात्राओं या परीक्षाओं के दौरान महवारी या अपनी सेहत से जुड़ी असुविधा से बचने के लिए वे ऐसी दवाओं का सहारा लेती हैं, जो अत्यंत खतरनाक है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुसार, एस्ट्रोजन युक्त गर्भनिरोधक दवाओं का उपयोग करने वाली महिलाओं को नियमित चिकित्सीय जांच कराते रहना चाहिए। विशेष रूप से पैंतीस वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं, धूम्रपान करने वाली महिलाओं, उच्च रक्तचाप की समस्या एवं मोटापे से ग्रस्त महिलाओं और जिनके पारिवारिक इतिहास में रक्त का थक्का बनने की समस्या है, उनके लिए यह जोखिम और भी अधिक बढ़ जाता है। चिकित्सा विशेषज्ञों का मानना है कि हार्मोन से संबंधित दवाओं का उपयोग केवल चिकित्सीय निगरानी में ही किया जाना चाहिए। * अमेरिकन कालेज आफ आब्स्टेट्रिशियन एंड गायनेकोलाजिस्ट्स' के मुताबिक, मासिक धर्म का दमन चिकित्सीय निगरानी में सुरक्षित हो सकता है, लेकिन यह आवश्यक है कि महिलाएं अपने चिकित्सक से संपूर्ण जानकारी साझा करें और नियमित जांच कराती रहें।

कई बार कुछ घटनाएं एक व्यापक समाज के लिए सबक का काम करती हैं। सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि महिलाओं की सेहत से जुड़ी समस्याओं पर ईमानदारी से चर्चा नहीं करने से महिलाओं सहित समूचे समाज की समस्या और ज्यादा जटिल ही होगी। परिवारों को यह समझना होगा कि महिलाओं के स्वास्थ्य संबंधी मुद्दे उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने कि पुरुषों के देर से इलाज कराने या डाक्टर

की सलाह को नजरअंदाज करने से जीवन को खतरा हो सकता है। माता- पिता और परिवारजनों को महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। शर्म या झिझक के कारण इलाज में देरी करना जानलेवा साबित हो सकता है। हमारी स्वास्थ्य व्यवस्था को महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। दवा की दुकानों में बिना चिकित्सक की सलाह के हार्मोन से संबंधित दवाओं की बिक्री पर सख्त नियंत्रण होना चाहिए। दवा विक्रेताओं को ऐसी दवाओं के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी होनी चाहिए और उन्हें ग्राहकों को चिकित्सीय सलाह लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

महिलाओं को हार्मोन से संबंधित दवाओं के सही उपयोग और संभावित जोखिमों के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है। चिकित्सकों को ऐसी दवाओं के नवीनतम दुष्प्रभावों के बारे में नियमित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ताकि वे मरीजों को सही सलाह दे सकें। दूसरी ओर, महिलाओं को भी अपनी सेहत को लेकर जागरूक होने की जरूरत है, ताकि वे अगर किसी दवा का सेवन करती हैं, तो रक्तचाप, रक्त थक्का बनने की प्रवृत्ति और अन्य महत्वपूर्ण मानकों की जांच कराना जरूरी मानें पैरों में असामान्य सूजन, दर्द, गर्माहट या त्वचा के रंग में परिवर्तन जैसे लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। इन लक्षणों के दिखने पर तुरंत चिकित्सकीय सहायता लेनी चाहिए। हालांकि इस समस्या का समाधान केवल चिकित्सा जगत की जिम्मेदारी नहीं है। समाज के प्रत्येक स्तर पर जागरूकता फैलानी होगी। परिवारों को महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील बनना होगा।

मलोट पंजाब



सोशल मिडिया ने निगला सोशलिज्म...

सोशल मिडिया के इस युग में अब पर्व त्योंहार बीत जाते हैं, पर वो खुशी महसूस नहीं होती है, जो बचपन में हुआ करती थी। दर्जी के पास से त्योंहार के पहले सही समय पर कपड़ा सिल कर मिल जाने की खुशी। अब महंगे रेडीमेड कपड़े मिल भी जायें तो वो खुशी नहीं मिलती, जो दर्जी के पास से मिली थैली में पड़ी रहती थी। अब कभी भी कपड़े खरीद सकते हैं, लेकिन बचपन में त्योंहार पर सिले जाने वाले कपड़े से मिलने वाली खुशी नहीं खरीद सकते हैं। दुनिया बेहद जटिल है। यहां हर व्यक्ति, वस्तु की व्याख्या अपनी जरूरतों और सुविधाओं के हिसाब से होती है, और बेहद बेशर्मी से होती है। हम चीजों को अपने हिसाब से मैनुयुलेट भी कर लेते हैं। अब तक हमारा जो व्यक्तिगत अनुभव रहा है, उसमें ईंसान अपनी अच्छाई, संवेदनशीलता, ईमानदारी, मददगार प्रवृत्ति के चलते उतना अच्छा और लोकप्रिय नहीं बन पाता है, जितना वह पद, पॉवर और पैसा की बदौलत बन जाता है। मेला धूमने के नाम पर दादी, मम्मी, चाचा, पापा से मिलने वाले दस, बीस, पचास रुपये की खुशी। ऐसा लगता था कि बड़ा खजाना हाथ लग गया हो। आज हाथ में हजारों भी हों तो वो खुशी नहीं मिलती है, जो दस बीस में मिल जाती थी। पता नहीं, बहुत कुछ होने के बाद हम वह खुशियां अपने बच्चों को नहीं दे पाते हैं, जो हमें हमारे छुटपने में मिली थीं। आज बाजार में एक से बढ़कर एक खिलौने हैं, लेकिन जो खुशी चार-पांच रुपये के मिट्टी वाला भोंपू से मिल जाता था, वह हजारों के खिलौनों से भी नहीं मिलता है। पता नहीं, लोग बदल गये, समय बदल गया या हम ने ही जीना छोड़ दिया है। यह दुनिया हिप्पोक्रेट है और पैसा-पॉवर ही असली सच्चाई है। छूआछूत के उदाहरण से समझिये। हम दलित मैकू लाल के घर का पानी नहीं पियेंगे, लेकिन ताकतवर, अमीर खड़ेगें साहब के घर का भोजन भी कर लूंगा।

यही सिस्टम नेताओं, अधिकारियों में भी लागू है। जो मददगार है, ईमानदार है, उसकी कहीं कोई पूछ नहीं है। उसका कोई गुणगान नहीं है। आज कोई ईमानदार और मेहनत से काम करने वाले धोतीधारी नेता दीनदयाल चुनाव लड़े तो उसके जीतने की संभावना नगण्य होती है। अव्वल तो पार्टी ही किसी ईमानदार और मेहनती को टिकट नहीं देगी, लेकिन खुदा ना खास्ता टिकट मिल भी गया तो हमारा सड़ा और दोगला समाज खुद ही ऐसे लोगों को नहीं चुनेगा, जो उनके लिये लड़ सकना है। जो पैसे देकर टिकट खरीदता है, तथा जमकर दारू-मुर्गा और पैसा बांटता है। इसलिये साफ है कि हम हिप्पोक्रेट लोग हैं। पैसा और पॉवर ही आखिरी सच है, बाकी अच्छाई, ईमानदारी, संवेदनशीलता संगीत है, जो बस सुनने में अच्छा लगता है। एक छोटा सा पत्रकार हजार, दो हजार, लाख रुपये इधर उधर कर दे तो वह ललाल, ब्लैकमेलर हो जाता है, समाज चीख-चीखकर उसके खिलाफ बोलता है, वह सबकी नजरों से भी गिर जाता है, लेकिन वही दूसरा नेता जो करोड़ों, अरबों का खेल करे, चिकित्सा विश्व-विद्यालयों की दलाली करे, किसी बड़े संस्थान में नेताओं के जुगाड़ से नौकरी करता रहे, विधायक-सांसद-मंत्री बनाने की डिलिंग करता रहे, वह समाज में बड़ा नामी और इज्जतदार बन जाता है। समाज उसे मान्यता दे देता है। लोग उसके फसाने लिखते हैं। तराने गाते हैं, उसे पलकों पर बैठाते हैं, क्योंकि वह पार्टी देता है। दो चार लोगों के टेढ़े मेढ़े काम का देता है। यह हिप्पोक्रेसी नहीं तो फिर क्या है? दरअसल, यह पूरा समाज दोगला है और दोगले ही सफल हैं। और जितने भी सफल हैं, उनमें से ज्यादातर दोगले हैं। पार्टी बदलता है। फिर हम नाटक करते हैं कि हमारा विधायक-सांसद-मंत्री सुन नहीं रहा है, विकास नहीं करा रहा है। हम दोगले और हिप्पोक्रेट लोग हैं, जो पद, पैसे और पॉवर के पीछे भागते हैं, और अपने को सही साबित करने के लिये दूसरों की गलती निकालते हैं। जैसे कि मैं। असफल हूँ तो दूसरों की गलतियां निकाल रहा हूँ।



पंकज सीबी मिश्रा
जौनपुर यूपी

नीले ड्रम वाली मुस्कान की मूर्ति



‘देवरिया में नीले ड्रम और सीमेंट वाली मुस्कान की मूर्ति ट्रेडिंग में है’ हिंदुओं के धार्मिक त्यौहार अब मात्र मनोरंजन के विषय बनकर रह गए हैं। दशहरा पहले जहां भक्ति भाव से परिपूर्ण त्योहार था ,वहीं अब मात्र मनोरंजन और विलासिता का उदाहरण बनकर रह गया है। हमारे बचपन दिनों के दशहरा और आज के दशहरा में भारी बदलाव देखने को मिल रहा है।

पहले जहां शहरों में जहां केवल माता दुर्गा की प्रतिमा आदि सजाई जाती थी ,सुंदर झाकियां बनाई जाती थी ,जो सभी देवी दुर्गा और महिषासुर से संबंधित थे। तमाम देवी देवताओं का दर्शन होता था ,झाकियां देखकर मन प्रसन्न हो जाता था । मगर वहीं अब आजकल के दशहरा के झाकियां उम्दा हैं किंतु फूह-डुता भी व्याप्त होती जा रही हैं। जहां दशहरा में फूहड़ गीत बजते वही उल्टी सीधी प्रतिमा स्थापित भी कर रहें हैं। दशहरा की मूर्ति पूजा के नाम पर देवरियाँ जिला ने तो हद ही कर दिया अपराधी मुस्कान की मूर्ति बनाकर माता के पंढार में सजाकर ।

क्या संदेश देना चाहते हैं आखिर ? देवरिया के मूर्ति क्लब वाले ,,,क्या ये उचित है ? जो मुस्कान अपने पति को टुकड़े टुकड़े में काटकर नीले ड्रम में दो बोरी सीमेंट ऊपर से डालकर जमा कर अपराध

को लीपा पोती करनी चाही , क्या उसकी मूर्ति स्थापित करना उचित है ? यह सब देखकर आने वाली जनरेशन पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? काश की मूर्ति क्लब के लोग इस विषय पर विचार करते।

दुनिया में ओर भी अच्छे विषय हैं सोफिया कुरैशी , व्योमिका सिंह ।

देश की राष्ट्र पति द्रोपदी जी आदि की मूर्ति बनानी चाहिए जिससे अच्छे संदेश जाए बच्चों में । बच्चे जो देखते वही सीखते हैं अच्छी चीज को कम बुरी चीज को अधिक दिमाग में बैठाते हैं आज के बच्चे । पर मूर्ति वालो को इससे क्या करना है ? उनको तो ट्रेडिंग में रहना है । देवरिया वाली भाभी , सलेमपुर वाली की मूर्ति बनाकर । नीला ड्रम दो बोरा सीमेंट से ट्रेड करवाना अपनी मूर्ति को कला दिखाने के लिए विषय बहुत पर क्या कहा जाए सब गंदगी दिमाग में भरा पड़ा बुरी चीजें ही सबको उठानी है। जो भी हो यह गलत संदेश दे रही मुस्कान की मूर्ति देवरियां कि जनता को इस नीले ड्रम और सीमेंट वाली मुस्कान की मूर्ति का वहिष्कार करना चाहिए था। लेकिन अफसोस की लोग विरोध करने के बजाय उसे ट्रेडिंग में ला दिए जो आने वाली जनरेशन के लिए खतरनाक है।

नीरज कुमार सिंह

देवरिया उत्तर प्रदेश



आप सब कैसे हैं ? हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं हम तो बहुत बदले, क्या आप जैसे के तैसे हैं हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं किसी को चांदी लग गए हैं काले बालों में किसी की झुर्रिं दिख रही नाजुक गालों में कुछ साथी तो दिखते हैं जैसे कि तैसे हैं हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं कोई बन गया नाना तो कोई बन गई नानी कुछ आंखे गम में नम कुछ में खुशी की पानी सावन में बरसे बादल उमड़ -2 के जैसे है हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं संघर्ष से तपकर आप सब जीवन में आगे है कर्मों की खेती से जुड़ते जीवन के धागे है परिवर्तन के दौर में कुछ तो जैसे के तैसे हैं हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं खरा सोना तपकर ही तो कुंदन बनता है संघर्षों की कहानी जीवन की सफलता है यह जीवन सदा लगता वलय के जैसे हैं हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं कल तक जो बेटी थी आज किसी की मां है कल तक जो बेटे थे आज किसी के पापा है बीत गया तीस साल, लगता कल के जैसे है हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं एक मंच मिला है फिर से साथ चलने का अनुभव साझा कर मिलने और जुलने का यह ग्रुप लगता मुझे हसीन ख्वाब के जैसे है हमारे बैच के साथी बताओ आप सब कैसे हैं



प्रमेशदीप मानिकपुरी

आमाचानी धमतरी छग

सेलेना गोमेज ने 33 की उम्र में बेनी ब्लैको संग रचाई शादी



मिसेस बन गई हैं।

बता दें कि, सेलेना और बेनी के वेडिंग लुक में दोनों ही अपने-अपने आउटफिट में कमाल के लग रहे हैं। ब्राइड ने बैकलेस व्हाइट लॉन्ग गाउन पहना था जिसे उन्होंने मिनिमल डायमंड इयररिंग्स से स्टाइल कर रखा था। खुले बालों में उनकी प्यारी से मुस्कान खूबसूरती



बिखेर रही है। बेनी ब्लैक टक्सीडो में हैंडसम लग रहे थे। पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए, बेनी ने कहा, हरियल लाइफ में मेरी पत्नी। एक प्रशंसक ने कहा, आपके लिए बहुत खुश हूं!! बधाई हो, क्वीन; आप दुनिया भर के प्यार की हकदार हैं! एक व्यक्ति ने लिखा, आप दोनों के लिए बहुत खुश हूं। बधाई!



बचपन के खेले

हॉलीवुड सिंगर और एक्ट्रेस सेलेना गोमेज ने शनिवार को अमेरिकन रिकॉर्ड प्रोड्यूसर और सॉन्ग राइटर बेनी ब्लैको से शादी कर ली। सेलेना ने अपने इंस्टाग्राम पर एक प्यार भरी पोस्ट के साथ इस खबर की घोषणा की। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर शेयर की गई तस्वीरों और वीडियो में, यह कपल एक लॉन में तस्वीरों के लिए पोज देते हुए एक-दूसरे को किस और गले लगाते हुए दिखाई दे रहे हैं। काफी समय से सेलेना अपनी शादी को लेकर चर्चा में थी। इतना ही नहीं, सगाई के बाद उन्होंने अपने दोस्तों के साथ बैचलरेट पार्टी एन्जॉय की और प्री-वेडिंग सेलिब्रेशन के बाद में ही उनका वेडिंग फंक्शन सेलिब्रेट किया।

सेलेना गोमेज ने अपने लॉन्ग टाइम बॉयफ्रेंड बेनी ब्लैको से कल यानी के 27 सितंबर 2025 को क्रिश्चियन रीति-रिवाज से शादी रचाई है। पहले ही उन्होंने अनाउंस कर दिया था कि वह सितंबर महीने में बेनी के साथ शादी करेंगी और अब वह रियल लाइफ में बेनी ब्लैको की



पं. छन्नूलाल मिश्र शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन में सिद्धस्त वाराणसी । पं. छन्नूलाल मिश्र शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन में सिद्धस्त थे। वह बाएं हाथ का तबला भी बजाते थे। वह अपनी जीवन के प्रारंभिक दौर में गाने के साथ अपने पिता के साथ तबला भी बजाते थे। पं. रामकुमार मिश्र ने बताया कि मेरी माता प्रख्यात तबला वादक स्व. अनोखेलाल मिश्र की बेटी थीं। वह भी तबला बजाती थीं। मैंने बचपन में माता जी से तबला बजाना सीखा था। पं. छन्नूलाल अपने परिवार में पांचवीं पीढ़ी के कलाकार थे। पहली पीढ़ी के कलाकार पं. वागेश्वरी प्रसाद और दूसरी पीढ़ी के पं. पिंगल मिश्र थे। परदादा पंडित ढोलई प्रसाद तीसरी पीढ़ी, पंडित बद्री प्रसाद मिश्र चौथी पीढ़ी और पांचवीं पीढ़ी के संगीतज्ञ पंडित छन्नूलाल मिश्र थे। मेरी (पंडित रामकुमार मिश्र) पीढ़ी छठवीं और मेरे बेटे पंडित राहुल मिश्र की सातवीं पीढ़ी है।

चार बेटियां और एक बेटे, अब पोता निभा रहा जिम्मेदारी: बेटी ममता मिश्र, अनीता मिश्र गृहणी हैं। संगीता मिश्र भी गृहणी थीं लेकिन उनका निधन हो गया। छोटी बेटी डॉ नम्रता मिश्र संगीत की शिक्षक हैं। वह मिजापुर के एक कॉलेज में पढ़ाती हैं। बेटे पंडित रामकुमार मिश्र तबलावादक हैं। पोते राहुल मिश्र भी तबलावादक हैं।

पं. छन्नूलाल की अंतिम प्रस्तुति मार्च 2021 ओडिशा में हुई थी। प्रख्यात बांसुरी वादक पद्मविभूषण पं. हरिप्रसाद चौरसिया और उनके पोते राहुल ने संगत की थी। पंडित मिश्र के बेटे पं. रामकुमार मिश्र ने बताया कि पं. हरिप्रसाद के भुनेश्वर स्थित गुरुकुल में होली उत्सव हुआ था।

पं. छन्नूलाल मिश्र अपनी कमाई से छोटी गैबी में मकान खरीदा था। फिर उसे अपने मुताबिक बनवाया। पं. रामकुमार मिश्र ने बताया कि तब वह मजदूरों के साथ खुद ईंट उठाकर लेकर जाते थे। धूप में भी दीवारों पर पानी देते थे। मजदूर उनको रोकते थे फिर भी वह नहीं मानते थे। कहते थे- अपना पहला मकान है। बड़ी मेहनत से कामकाज बनवा रहे हैं। मजदूरों के साथ सहयोग करके खुशी हो रही है। इस मकान में लंबे समय तक रहे, लेकिन परिवारिक विवाद के चलते वह अपने जीवन के अंतिम तीन साल यहां नहीं रह पाए।

पं. छन्नूलाल मिश्र ने 200 से ज्यादा बंदिशों की रचना की थी। पं. रामकुमार ने बताया कि पिता पंडित छन्नूलाल मिश्र ने ठुमरी, दादरा, कजरी और चैती पर भी शोध किया था। उन्होंने कबीर के पदों से भी चैती बनाई थी। बोल थे- कइसे सजन घर जइवे हो रामा...। पं. छन्नूलाल संगीत पर गहन अध्ययन करते थे। वह जो भी गाते थे, उसपर मंथन करते थे। पं. रामकुमार ने बताया कि पिता जी मानस की चौपाई से संगीत के सात सुरों को जोड़ा। सा रे गा मा पा ध नी के हर अक्षर से मानस की चौपाई से जोड़ा। कहते थे- सा से जीवन को साकार और नी से जीवन को इसी में विलीन होना है।

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक पंकज धर द्विवेदी द्वारा जनप्रकाशन प्रेस निकट रीड्स साहब का धर्मशाला से मुद्रित एवं 45, बादशाह बाग, जगन्नाथपुर, गोरखपुर से प्रकाशित।
संपादक: पंकज धर द्विवेदी
संपर्क सूत्र : ghoonghatkibagawat37@gmail.com